www.thearyasamaj.org

R.N.I. No. 2321/57

ओ३म्

रजि. सं. MTR नं. 04/2013-15

अक्टूबर 2013

अंक 9

तपोभूमि

मासिक

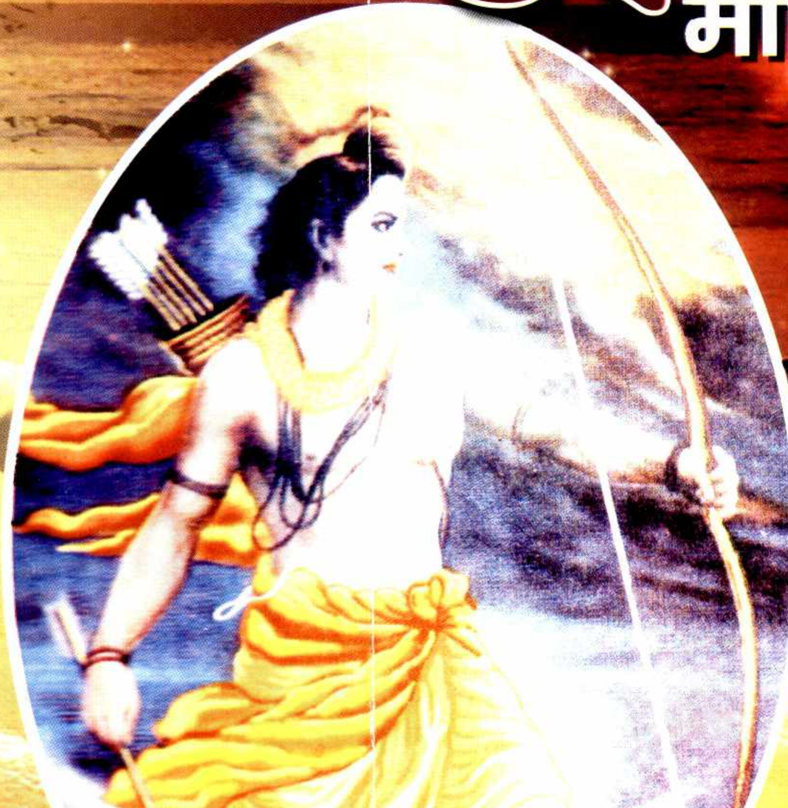

वैदिक संस्कृति के उन्नायक

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आजादी है या बर्वादी

व्यक्तिगत आजादी के नाम पर आज जो भी व्यवस्थायें दी जा रही हैं उससे राष्ट्र की भावी पीढ़ी पूरी तरह बर्वादी के कगार पर पहुँच गयी है। आध्यात्मिक चिन्तन के अभाव में वर्तमान सरकार से लेकर धार्मिक और सामाजिक जीवन के ध्वजवाहक जो व्यवस्था राष्ट्र और समाज के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं उससे सर्वत्र अशान्ति की अग्नि धू-धू करके जल उठी है जिसके आगोश में व्यक्ति समाज और राष्ट्र सभी कुछ आ गया है समाधान के लिए जो भी व्यवस्थायें दी जा रही हैं वे समस्यायें बनकर खड़ी हो गयी हैं। आत्म-हत्या, चोरी, डकैती, व्यभिचार, अत्याचार, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार सभी उन्मुक्त होकर फल-फूल रहे हैं। अस्पताल, जेलें, न्यायालय, विद्यालय सभी कुछ भ्रष्टाचार के अड्डे बनकर सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर रहे हैं कोई कहीं पर सुरक्षित नहीं है। स्वार्थरूपी राक्षस प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर इस तरह बैठ गया है कि उसके क्रूर पंजों से कोई नहीं बच पा रहा है कविवर दिनकर ने ठीक ही लिखा था कि-

जब स्वार्थ मनुज की आँखों पर,
मांडी बनकर छा जाता है।
तब वह मानव से बड़े-बड़े,
दुश्चिन्त्य कृत्य करवाता है।

आज की शिक्षा व्यवस्था व्यक्तिगत को स्वार्थ का पुतला बनाकर तैयार कर देती है। आज जो व्यापक दुर्दशा दिखाई दे रही है वह स्वार्थ-परता का ही परिणाम है। जब व्यक्ति स्वार्थी हो जाता है तब वह न माता को देखता है, न पिता को, न घर को, न परिवार को, न देश को, न समाज को। क्या आज आप स्वार्थरुपी राक्षस का क्रूर ताण्डव चारों ओर देख नहीं रहे हैं। स्वार्थ के विभिन्न रूप होते हैं यह व्यक्ति के अन्दर दुर्निवार्य भूख को पैदा कर देता है। कहते हैं एक भस्मक रोग होता है उसमें व्यक्ति को सदैव भूख लगी रहती है वह कुछ भी खाये सारा का सारा शीघ्र भस्म हो जाता है पर उस भोजन से रस नहीं बनता है जिससे व्यक्ति का जीवन चल सके और धीरे-धीरे रोगी समाप्त हो जाता है ठीक यही स्थिति इस स्वार्थरुपी रोग की होती है स्वार्थी सब कुछ निगल जाना चाहता है पर उस स्वार्थ में जीवन जीने का रस नहीं बनता है और स्वार्थी अपना और दूसरों का भी नाश कर देता है।

स्वार्थरुपी राक्षस बहुरूपिया है यहां नाना रूप धरकर हमारे सामने आता है और इसके शिकार जर, जोरु, जमीन ही होते हैं धन, स्त्री, भूमि के लोभ से स्वार्थियों ने संसार का अकथनीय अहित किया है और अब भी कर रहे हैं अंग्रेजी शिक्षा और संस्कार दोनों इस स्वार्थरूपी राक्षस के प्रबल पोषक हैं। आज सम्पत्ति के पीछे स्वार्थ भावना से ग्रसित, नेता अभिनेता, डाक्टर, वकील, न्यायाधीश, कर्मचारी वर्ग क्या से क्या नहीं कर रहे हैं भाई का कत्ल, भाई इसी से प्रेरित होकर कर रहा है। पिता, माता, भाई, बहिन, पत्नी, पुत्र कोई भी तो ऐसा नहीं है जिसे स्वार्थान्ध व्यक्ति छोड़ देता हो। दूरदर्शन, समाचार पत्रों द्वारा हम नित्य इस स्वार्थरुपी राक्षस के द्वारा किये खूनी कारनामों को देख और पढ़ रहे हैं अनेकों राष्ट्राध्यक्षों ने अपना और अपने राष्ट्र का सर्वनाश इसी के चक्कर

-शेष पृष्ठ सं. 35 पर

www.thearyasamaj.org

तपोभूमि

ओ३म् वयं जयेम (ऋक्0)

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक कल्याण की साधिका

(आर्य जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय मासिक)

वर्ष–59 संवत्सर 2070 अक्टूबर 2013 अंक 9

संस्थापक
स्व0 आचार्य प्रेमभिक्षु

संपादकः
आचार्य स्वदेश
मोबा. 9456811519

अक्टूबर 2013

सृष्टि संवत्
1960853114

दयानन्दाब्दः 190

प्रकाशक
सत्य प्रकाशन
आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग
मसानी चौराहा, मथुरा
(उ0 प्र0)
पिन कोड–281003

दूरभाषः
0565–2406431
मोबा. 9759804182

अनुक्रमणिका

लेख–कविता		पृष्ठ संख्या
वेदवाणी	–ध्रुवदेव परिव्राजक	4–5
दयानन्द दिग्विजयम्	–आचार्य मेधाव्रत	6–9
योगेश्वर कृष्ण	–पं0 चमूपति	10–12
कर्म संन्यास ध्यान योग	–डॉ0 सोमदेव शास्त्री	13–15
आर्ष–पाठविधि की उपयोगिता.....	–डॉ0 सुरेन्द्रकुमार आचार्य	16–18
आदिम और लौकिक भाषायें	–मनमोहन कुमार आर्य	19–21
वैदिक विज्ञान में रासायनिक ऊर्जा	–कृपालसिंह वर्मा	22–23
धूर्त जन	–ओमप्रकाशसिंह	24–25
अपने बुरे दिनों को याद रखो	–खुशहालचन्द्र आर्य	26–27
सत्यार्थ प्रकाश के विरोध में मुसलमानों का जुलूस	–प्रो0 उमाकान्त उपाध्याय	28–30
क्या ईश्वर नहीं है?		31–32
आर्यजगत के समाचार		33–34

❄ ❄ ❄

वार्षिक शुल्क 150/ पन्द्रह वर्ष के लिये शुल्क 1500/– रूपये

www.thearyasamaj.org

वेदवाणी

लेखकः स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक आर्यवन रोजड़, (गुज.)

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजु. अ. 1/ मं. 5

व्याख्यान 1.

इस मन्त्र का अभिप्राय यह है कि सब मनुष्य लोग ईश्वर के सहाय की इच्छा करें, क्योंकि उसके सहाय के बिना धर्म का पूर्ण ज्ञान और उसका अनुष्ठान पूरा कभी नहीं हो सकता।

हे व्रतपते ! सत्यपते परमेश्वर ! (व्रतं) मैं जिस सत्यधर्म का अनुष्ठान करना चाहता हूँ उसकी सिद्धि आपकी कृपा से ही हो सकती है। श.ब्रा. में इस मन्त्र का अर्थ लिखा है कि- "जो मनुष्य सत्य के आचारणरूप व्रत को करते हैं वे 'देव' कहाते हैं, और जो असत्य का आचरण करते हैं उनको 'मनुष्य' कहते हैं।" इसलिए मैं सत्यव्रत का आचरण करना चाहता हूँ। (तच्छेकयं) मुझ पर आप ऐसी कृपा कीजिए कि जिससे मैं सत्यधर्म का अनुष्ठान पूरा कर सकूँ। (तन्मे राध्यताम्) उस अनुष्ठान की सिद्धि करने वाले एक आप ही हो। सो कृपा से सत्यरूप धर्म के अनुष्ठान को सदा के लिए सिद्ध कीजिए। (इदमहमनृतात्) सो यह व्रत है जिसको मैं निश्चय से चाहता हूँ कि उन सब असत्य कामों से छूट के सत्य के आचरण करने में सदा दृढ़ रहूँ।

परन्तु मनुष्य को यह करना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्यों में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरूषार्थ अवश्य करें। उसके उपरान्त ईश्वर के सहाय की इच्छा करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का ईश्वर का यही प्रयोजन है कि मनुष्यों को अपने पुरूषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिए। जैसे कोई मनुष्य आँख वाले पुरूष को ही किसी चीज को दिखला सकता है, अंधे को नहीं। इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव, पुरूषार्थ से धर्म को करना चाहता है, उस पर ईश्वर भी कृपा करता है अन्य पर नहीं। क्योंकि ईश्वर ने धर्म को करने के लिये बुद्धि आदि साधन जीव के साथ रखे हैं। जब जीव उनसे पूर्ण पुरूषार्थ करता है, तब परमेश्वर भी अपने सब सामर्थ्य से उस पर कृपा करता है, अन्य पर नहीं। क्योंकि सब जीव कर्म करने में स्वाधीन और पापों के फल भोगने में कुछ पराधीन भी हैं।

-(ऋ. भा. भू. वेदोक्तधर्मविषय)

व्याख्यान 2.

हे सच्चिदानन्द स्वप्रकाशस्वरूप ईश्वराग्ने ! ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासादि सत्यव्रतों का

www.thearyasamaj.org

आचरण मैं करूँगा। सो इस व्रत को आप कृपा से सम्यक् सिद्ध करें तथा मैं अनृत अनित्य देहादि पदार्थों से पृथक् होके इस यथार्थ सत्य जिसका कभी व्यभिचार=विनाश नहीं होता, उस विद्यादिलक्षण धर्म को प्राप्त होता हूँ। इस मेरी इच्छा को आप पूरी करें जिससे मैं सभ्य, विद्वान्, सत्याचरणी आप की भक्तियुक्त धर्मात्मा होऊँ। -(आर्याभिविनय)

पदार्थ (अन्वय सहित)-

हे (व्रतपते) सत्यभाषणादि व्रतों के पालक ! (अग्ने) सत्यधर्म के उपदेशक ईश्वर ! (अहम्) धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करने की इच्छा वाला मैं जो (इदम्) इस सत्यव्रत को (अनृतात्) मिथ्याभाषण, मिथ्या बात को मानने से अलग होकर (सत्यम्) जो वेद विद्या, प्रत्यक्षादि प्रमाणों, सृष्टिक्रम, विद्वानों का संग, श्रेष्ठ विचार और आत्म शुद्धि के द्वारा जो भ्रान्ति से रहित, सबका हितकारक, तत्त्व-निष्ठ सत्प्रभव है और जो अच्छी प्रकार परीक्षा करके निश्चय किया जाता है, जो (व्रतम्) सत्य भाषण, सत्याचरण, सत्यमानना रूप व्रत है उसका (चरिष्यामि) पालन करूँगा (तत् मे) मेरे उस व्रत का अनुष्ठान और पूरा होना आपकी कृपा से (राध्यताम्) सिद्ध हो। जिसे (उपैमि) जानने, प्राप्त करने व आचरण में लाने के लिए (शकेयम्) समर्थ होऊँ (तत्) वह व्रत भी सब आपकी कृपा से (राध्यताम्) सिद्ध हो।

-(ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य अ. 1/मं. 5)

भावार्थः-

ईश्वर सब मनुष्यों के पालन करने योग्य धर्म का उपदेश करता है जो न्याय, पक्षपातरहित, सुपरीक्षित, सत्य लक्षणों से युक्त, सर्वहितकारी, इस लोक व परलोक के सुख का हेतु है वही धर्म सब मनुष्यों को सदा आचरण करने योग्य है और जो इससे विरूद्ध अधर्म है उसका आचरण कभी किसी को नहीं करना चाहिए। इस प्रकार सब प्रतिज्ञा करें-हे परमेश्वर ! हम वेदों में आप से उपदिष्ट इस सत्यधर्म का आचरण करना चाहते हैं। यह हमारी इच्छा आपकी कृपा से अच्छी प्रकार सिद्ध होवे। जिससे हम अर्थ, काम, मोक्ष रूपफलों को प्राप्त कर सके और जिससे अधर्म को सर्वथा छोड़कर अनर्थ, कुकाम, बन्धरूप दुःख फल वाले पापों को छोड़ने और छुड़ाने में समर्थ होवें।

जैसे आप सत्यव्रतों के पालक होने से व्रतपति हैं वैसे ही हम भी आपकी कृपा से, अपने पुरूषार्थ से यथाशक्ति सत्य व्रत के पालक बनें। इस प्रकार सदा धर्म करने के इच्छुक, शुभ कर्म करने वाले होकर सब सुखों से युक्त व सब प्राणियों को सुख देने वाले बनें। ऐसी इच्छा सब सदा किया करें।

-(ऋ. दया. कृत यजुर्वेदभाष्य अ. 1/मं. 5)

❋❋❋

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे

दयानन्द दिग्विजयम्

लेखकः आचार्य मेधाव्रत

शिखण्डिनीं संनिकटागतां तां शिखण्डिनो नो दधतेऽनुरागम्।
विनिस्पृहास्ते विषयेषु दोषान् विज्ञाय किं दोषविदो विरक्ताः।। 54।।

ये मोर पास आई हुई मयूरियों को भी देखकर अनुराग प्रकट नहीं कर रहे हैं। मानो वे विषयों में दोषों को देखकर निस्पृह होकर विरक्त हो गये हों।। 54।।

नभोऽम्बुदैर्हीनमिदं विलोक्य कलापिनो मुक्तकलापरत्नाः।
वितर्जिता हंसवरेण्यनादैर्मौनं स्थिता नूनममी विवर्णाः।। 55।।

मोरों ने आकाश को बादल रहित देखकर अपने कलाप-भूषण को त्याग दिया है और हंसों के शब्दों से तिरस्कृत होकर सचमुच मलिन से हुए मानो मौन बैठे हैं।। 56।।

श्रृंगाणि चारूणि महागिरीणां धौतानि पूर्वं जलदावलीभिः।
भास्वन्मणीनां रमणीयभासा हसन्ति संभान्ति दिनेन्द्रकान्तिम्।। 57।।

मेघमाला द्वारा बड़े-बड़े पर्वतों की चोटियाँ पहले ही धोई जा चुकी थीं। इसलिये वे उज्ज्वल रत्नों की रम्य प्रभा से मानो दिनराज सूर्य की प्रभा को भी हँस रही हैं।। 56।।

चकोरकारण्डवचक्रवाकश्रीहंसराजालिविशालिनीनाम्।
स्रोतस्विनीनां सरदच्छवारां श्रीः कापि काशाम्बरधारिणीनाम्।। 57।।

चकोर, चकवा, कारण्डव एवं हँसों की पंक्तियों से शोभित, शुभ्र पुष्परूपी वस्त्रों को पहननेवाली, बहती हुई स्वच्छ जलमण्डित नदियों की तो अवर्णनीय शोभा है।। 57।।

आशास्सुहासास्सरितस्सुकाशानृपा निजारातिनिबर्हणाशाः।
सप्तच्छदामोदसुगन्धिताशाः प्रवान्ति वाता इह मन्दशीताः।। 58।।

दिशायें हँस रही हैं, नदियाँ काश-पुष्प से शोभित हैं। नृपतिगण अपने शत्रु का मर्दन करने के लिये उद्यत हो रहे हैं। सप्तच्छद की सुगन्धि दिशाओं में महक रही है और शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह रहा है।। 58।।

सरोजिनी स्मेरसरोजकान्ता प्रसन्ननीरा कलहंसतीरा।
मुदेन्दिराऽऽस्ते ह्युपवीणयन्ती यस्यां मिलिन्दोदितवन्द्यगीतिः।। 59।।

विकसित कमलों से सुन्दर निर्मल-नीरशाली, राजहँसों के निवासस्थान रूप इस सरोवर में लक्ष्मीदेवी आनन्द से हाथ में वीणा धारण करके गूँजते हुए भ्रमरों के बहाने से मानो मधुर गान गा रही हैं।। 59।।

www.thearyasamaj.org

एणीकुलं शालिपबालिकायानिशम्य माधुर्यमयं सुगीतम्।
बुभुक्षितं नैव बुभुक्षते तत् केदारभाग् धान्यमहो विमुग्धम्।। 60।।

अनाज खाने के लिये गया हुआ हरिणियों का झुण्ड धान की रखवाली करनेवाली गोपबालिकाओं के मधुर कर्णप्रिय गायन सुनकर भूखे रहने पर भी धान नहीं खा रहा है।। 60।।

सुपक्वसस्याहितरम्यलक्ष्मीवसुन्धराऽऽभाति वसुन्धरैव।
नूनं मुने भूतशिवंकरीयं व्याजह्रुरेवं बटुसाधुवर्याः।। 61।।

इस प्रकार स्वामीजी की वाणी सुनकर ब्रह्मचारी और दोनों साधुओं ने कहा कि हे मुनिवर! उत्तम पके हुए अन्नों से मनोहर शोभावाली वसुन्धरा सचमुच वसुन्धरा ही प्रतीत होती है। अतः यह विश्वम्भरा सब प्राणियों का कल्याण करने वाली है।। 61।।

रुद्रप्रयागं कृतभूरियागं योगागमज्ञो निकषा वनान्तात्।
निर्वर्ण्य कान्तान् घटयोनिशान्ताश्रमं समायात्सममर्च्यशीलैः।। 62।।

बाद में उन पवित्र चरित्रशाली साधुओं के साथ योगशास्त्र में पारंगत स्वामीजी अनेक यागादि के कारण विख्यात रुद्रप्रयाग का अवलोकन कर उसके आसपास के सुन्दर गिरि वन प्रदेशों को देखते हुए अगस्त्य ऋषि के शान्त आश्रम में जा पहुँचे।। 62।।

आमन्त्र्य यातौ यतिनं क्वचित्तौ सवर्णिसाधू स्वमनीषितार्द्रौ।
भ्रमन्मनीषी विविधाश्रमेषु शिवां पुरीं शृंगगतामयासीत्।। 63।।

कुछ काल ठहरकर ब्रह्मचारी और दोनों साधु यतिवर दयानन्दजी की अनुज्ञा लेकर अपने इच्छित प्रदेशों में चले गये। महामनीषी योगिराज दयानन्द अनेकों आश्रमों में घूमते घामते, पहाड़ के शिखर पर बसी हुई शिवपुरी आ पहुँचे।। 63।।

लालित्यलीलाललनालयाले शैलोत्तमांगे स विशालसाले।
यतीशचन्द्रः शुभपर्णशालामध्यूषिवान् यापयितुं तुषारम्।। 64।।

सौन्दर्यमयी लीलाललना के निवासस्थान और विशाल साल वृक्षों से शोभित शैलशंग पर ये यतीश्वर हेमन्त ऋतु को बिताने की इच्छा से रहे।। 64।।

प्रालेययंजालमयं जलानां मृगांकयन्नुष्णकरं समीरम्।
कृतान्तयंजीवनदं समन्ताद्धेमन्तमायाचण ऐन्द्रजालिक ऐदगान्ते।। 65।।

इस पर्वत प्रदेश में पानी को बर्फ बनाता हुआ, सूर्य को चन्द्र तुल्य शीतल करता हुआ तथा जीवनदायी वायु को यमराज बनाता हुआ हेमन्तकाल ऐन्द्रजालिक की तरह आया।। 65।।

अम्भोजिनी शीतहतांगदीना जाता भुजंगा मदवारिहीनाः।
प्रालेयनीरे विकला हि मीनावह्वयाश्रया हन्त नु दीनदीनाः।। 66।।

बिचारी कमलिनी की काया शीत के कारण जीर्ण शीर्ण हो गई है, साँप मदहीन हो गये। मछलियाँ

www.thearyasamaj.org

पानी में भी व्याकुल होने लगीं। हाय! बिचारे गरीबों को केवल अग्नि का ही आश्रय था॥ 66॥

तुषारजालान्तरितोग्रभासं भास्वन्तमेतं परिकल्प्य चन्द्रम्।
सरोजिनी संविरहेण बभ्रे नालावशेषां ध्रुवमंगयष्टिम्॥ 67॥

कुहरे से आच्छादित सूर्य को चन्द्र समझकर सरोजिनी दिन में ही सूर्य के विरह से मानो कृश होकर कमलदण्डमात्र शेष रह गई॥ 67॥

सारंगडिम्भो हिमपीडितांगः स्तन्यं जनन्या बत पातुकामः।
दृढं मिथस्सम्पुटिताच्छदन्तं व्यादातुमास्यं प्रभुरेव नासीत्॥ 68॥

हिम से व्याकुल शरीरवाला हरिण का बच्चा मां का दूध पीना चाहता है, किन्तु सरदी से दोनों जबड़े जकड़ जाने के कारण मुख न खुलने से दूध नहीं पी सकता है॥ 68॥

जलं विहंगा जलचारिणोऽपि नादो व्यगाहन्त सुकेलिकामाः।
वरूथिनीं युद्धकलानभिज्ञाविशन्ति नो भीरुहृदो यथाऽमी॥ 69॥

उत्तम क्रीड़ाकल्लोल की कामनावाले, जलविहारी पक्षी भी जल में अवगाहन नहीं करते थे। जैसे युद्धकला से अनभिज्ञ कायर पुरुष सेना में प्रविष्ट नहीं होते॥ 69॥

मध्यन्दिनेऽपि द्विरदास्तृषार्त्ताअस्प्राक्षुरम्भो न करेण शीतम्।
ग्रहीतुमेतत् प्रभवो यदा नो पातुं पुनः का क्षमता तदीया॥ 70॥

प्यासे हाथी दोपहर में भी ठंडे पानी को छू नहीं सकते थे; जब पानी को वे ग्रहण नहीं कर सकते थे तो फिर पीने का सामर्थ्य कैसे हो॥ 70॥

हेमन्तकाले हिमशैलभूमिः शुक्लैर्हिमैश्छन्नसरोवनान्ता।
श्वेताम्बरालंकृतदेहवल्लीदेवीव साध्वी रुरुचे निकामम्॥ 71॥

हेमन्त काल में बर्फ से ढके हुए तालाब और वनों वाली, हिमालय की भूमि श्वेतवस्त्रधारिणी साध्वी स्त्री की तरह सुतराम् अच्छी ही लगती थी॥ 71॥

निर्बाधसंकल्पमनाः स्वतन्त्रः स संयमीन्द्रः शिवपुर्यमुष्याम्।
व्यत्याय्य मासाँश्चतुरोऽद्रिशृंगादवातरत्तीर्थपदं दिदृक्षुः॥ 72॥

अबाधित-संकल्प, स्वतंत्र यतीन्द्र दयानन्द उस शिवपुरी के शिखर पर 4 मास बिता कर दूसरे तीर्थस्थानों को देखने की इच्छा से नीचे उतरे॥ 72॥

स गुप्तकाश्यादिषु धामसु श्रीनारायणान्तेषु महात्मसंगी।
परिव्रजन्पावनमूर्त्तिरागात् केदारघट्टं पुनरेव काम्यम्॥ 73॥

श्रेष्ठ महात्माओं की संगति की इच्छावाले पवित्रमूर्त्ति दयानन्द गुप्त काशी से लेकर बद्रीनारायण तक के सबधामों में घूमधाम कर फिर से रमणीय केदारघाट आ पहुँचे॥ 73॥

गंगागिरिस्संगतिसौख्यलाभान् निसर्गसौन्दर्यगुणेन धाम्नः।
मुदे बभूवात्र मुनेर्निवासः प्रमोदते को न निजेष्टलाभे॥ 74॥

www.thearyasamaj.org

यहाँ का निवास स्वामीजी के लिये गंगागिरि महात्मा की संगति के आनन्दलाभ एवं स्थान की स्वाभाविक सुन्दरता के कारण आनन्ददायक हो गया। अपनी इष्ट प्राप्ति से किसे आनन्द नहीं होता॥ 74॥

महोदयो जंगमसम्प्रदाये दीक्षाजुषां पण्डितपूजकानाम्।
समागमैस्तत्कृतिनीतिरीतिं विदन् विदांवर्य उवास दीर्घम्॥ 75॥

विद्वानों में श्रेष्ठ महोदय दयानन्द जंगम संप्रदाय के अनुयायी पण्डितों और पुजारियों के समागम से उनकी रीति नीति आचार व्यवहार जानते हुए चिरकाल तक रहे॥ 75॥

शनैः शनैश्शैलभुवो नितम्बात्तुषारचैलं शिशिरः कराग्रैः।
सौरैरपासार्य जहास नूनं परिस्फुटत्कुन्दलताप्रसूनैः॥ 76॥

शिशिर समय धीरे-धीरे पर्वतभूमि की मध्यस्थली पर से सूर्य की किरणरूपी अपनी अंगुलियों से बरफ की चादर हटाकर, खिलते हुए कुन्द लता के फूलों से मानो हँस रहा था॥ 76॥

परं नगोर्व्या हरितद्रुमालीवल्लीदुकूलं धृतमन्तरासीत्।
अतः फलिन्याः कुसुमोपहासैस्त्लज्जयत्सा कितबं प्रगल्भा॥ 77॥

परन्तु पर्वतभूमि ने हरे-हरे वृक्षों की पंक्तियों और लताओं की साड़ी अंदर पहन रखी थी इसलिये उस प्रगल्भा ने मेंहदी के फूलों के बहाने उपहास करके उस धूर्त शिशिरकाल को लज्जित कर दिया॥ 77॥

हिमोत्तमांगं स्थविराद्रिभर्त्तुर्बभौ महर्षेरिव शुक्लशीर्षम्।
अनन्तकालादवहद्यतः श्रीज्ञानाम्बुगंगा विमलार्यलोके॥ 78॥

बूढ़े पर्वतराज हिमालय का शिर महर्षि के श्वेतमस्तक की तरह चमक रहा था। क्योंकि उसके मस्तक से निकली पवित्र ज्ञान-गंगा चिरकाल से आर्यावर्त्त में बह रही है॥ 78॥

तुंगेषु शृंगेषु वसन्ति नित्यं हिमालयस्यैव तपोहिरण्याः।
योगीन्द्रसंघा हिममण्डितेषु श्रुतिं ययावस्य जनप्रवादः॥ 79॥

स्वामीजी ने सुन रक्खा था कि हिमालय की बर्फीली ऊँची चोटियों पर तपोवन योगिजनों का मण्डल हमेशा ही रहता है॥ 79॥

इति द्रढीयान् हृदि सत्यवाचोविचेतुमेतानभवद् विचारः।
ततोऽन्वयुंक्तायमगेन्द्रजातान् योगीन्द्रयोगस्थलमिद्धमेधः॥ 80॥

इसलिये सत्यसंकल्पी दयानन्द के मन में उन्हें अन्वेषण करने के लिये दृढ़ विचार उत्पन्न हुआ। अतः तीक्ष्ण बुद्धिशाली स्वामी ने पहाड़ियों से योगियों के रहने के स्थान के विषय में पूछताछ की॥ 80॥

अज्ञानिनां पर्वतवासिनृणां सन्तोषदं नोत्तरमाप योग्यम्।
महात्मनां कन्दरमन्दिरेषु निवासनिश्चायकमात्मदर्शी॥ 81॥

आत्मदर्शी दयानन्द ने पर्वतवासी उन अज्ञानियों से गिरिगुफाओं में महात्माओं के निवास सम्बन्धी संतोषप्रद योग्य उत्तर न पाया॥ 81॥

-(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

योगेश्वर कृष्ण

भीष्म बाबा की शर–शय्या

लेखकः पं. चमूपति

महाभारत का युद्ध अठारह दिन रहा था। पहले दस दिन तक कौरवदल के प्रधान सेनापति भीष्म थे। ये बाल–ब्रह्मचारी थे। योद्धा अद्वितीय थे। सारी आयु लड़ाइयाँ लड़ते और नीति के सूत्र सुलझाते कटी। इन्होंने सेना के कई व्यूह रचे। मार–काट इतनी की कि कई बार पाण्डव थर्रा गए। तीसरे और नवें दिन इन्होंने विशेष पराक्रम दिखाया। हजारों योद्धा खेत रहे।

भीष्म, सम्बन्ध में दोनों पक्षों के दादा थे। पाण्डवों को देखकर इनके हृदय में प्रेम उमड़ आया। युद्ध को रोकने का इन्होंने भरसक प्रयत्न किया था, परन्तु दुर्योधन के दुराग्रह के आगे किसी की पेश न गई थी। पाण्डवों को बचाकर युद्ध करते थे। दूसरे दिन अर्जुन के बाणों से अपनी सेना का अधिक क्षय होता देख दुर्योधन ने भीष्म से कहा–जाइये दादा! बढ़ते हुए अर्जुन को आप ही रोकिये। इन्होंने अर्जुन पर प्रहार किया सही, परन्तु ठण्डी साँस लेकर, क्षात्र–धर्म को धिक्कार कर। यही वृत्ति अर्जुन की भीष्म के प्रति थी। इसके शस्त्र–प्रहार की मृदुता की तो युधिष्ठिर को भी शिकायत थी, कृष्ण को भी। युधिष्ठिर दूसरे ही दिन युद्ध से विरक्त हो गया था। उसे अधिक दुःख इस बात का था कि भीष्म तो दिव्य अस्त्रों का प्रयोग किये जाते हैं, परन्तु अर्जुन ऋजु युद्ध पर ही तुला है। तीसरे दिन श्री कृष्ण ने अर्जुन को उकसाकर भीष्म के सम्मुख ला खड़ा किया। अर्जुन ने अपने हस्त–लाघव तथा धनुर्विद्या की कुशलता से भीष्म के दो धनुष निरन्तर छेदकर बेकार कर दिये। भीष्म रुष्ट होने के स्थान में प्रसन्न हुए। उन्होंने अर्जुन को साधुवाद दिया। उसे प्रेमपूर्वक लड़ने के लिए बुलाया। यह साधुवाद और प्रेम का निमन्त्रण अर्जुन के हृदय के साथ–साथ भुजाओं को भी शिथिल कर गया। श्री कृष्ण ने देखा कि चाहे अर्जुन का अपना शरीर तीरों से छलनी हुआ जाता है, परन्तु भीष्म के गौरव के कारण वह पूरे जोर से लड़ता नहीं। श्री कृष्ण ने अपनी सारथि–विद्या का सारा कौशल अर्जुन के बचाने में लगा दिया। वे रथ को ही ऐसे चक्कर देते कि भीष्म के तीर खाली जाते। पर आखिर लड़ना तो अर्जुन ही को था। श्री कृष्ण उसका स्थान नहीं ले सकते थे। भीष्म बचाव करते–करते भी जहाँ सेना का सफाया कर रहे थे, वहाँ अर्जुन और श्री कृष्ण को भी घायल किये जाते थे। कृष्ण कुछ समय तो अर्जुन के लाड–चाव को धैर्यपूर्वक सहते गए। जब उन्होंने देखा कि पानी सिर से गुजर रहा है तो वे रथ से उतर आए और अपना सुदर्शनचक्र घुमाते हुए पितामह की ओर चले। भीष्म कृष्ण का भक्त था। उसका यह विश्वास था कि और कोई तो संभवतः उसे रण में न जीत सके, कृष्ण या अर्जुन लड़ने पर आ जाएँ तो उसे मार सकते हैं। उसने कृष्ण को अस्त्र उठाते हुए अपनी ओर आता देख हथियार

www.thearyasamaj.org

डाल दिये और कहा–"आप मुझे मार डालिये, आपके हाथों मरना अनुपम पुण्य है।" श्री कृष्ण ने डाँटा–"यह युद्ध आपकी ही करतूत है। न आप द्यूत होने देते, न बुरे दिन पृथिवी पर आते। यदि दुर्योधन आपकी नहीं मानता था तो आपको उससे अलग हो जाना चाहिए था।" भीष्म ने कहा–"राजा परम देवता है; उसे छोड़ा नहीं जा सकता।" कृष्ण ने झट उत्तर दिया–"हमने कंस को छोड़ दिया था कि नहीं?" इतने में अर्जुन ने रथ से उतरकर कृष्ण को पीछे से आ पकड़ा। श्री कृष्ण उसके रोके नहीं रुके। उल्टा उसे ही घसीट ले चले। आखिर उसने बलपूर्वक उनके पाँव पकड़ लिये। फिर भी वे चलते गए। दसवें कदम पर रुके। अर्जुन ने प्रतिज्ञा की कि अब देख लेना; पूरे जोर से लड़ूँगा। आप अपनी निरस्त्रता का प्रण न तोड़िये। तब कहीं अर्जुन ठिकाने से लड़ने लगा।

यही तमाशा फिर नवें दिन हुआ। दसवें दिन पाण्डव यह संकल्प करके निकले कि आज भीष्म को मार डालना है। इसके रहते पाण्डव–पक्ष की विजय की कोई आशा नहीं। रात को उन्होंने सलाह दी कि भीष्म को कैसे गिराया जाय? राजा विराट् की सभा में कभी अर्जुन ने आवेश में आकर कहा था–"भीष्म पितामह का हनन मैं कर दूँगा।" श्री कृष्ण ने उसे वे वचन याद दिलाए। युधिष्ठिर से यह भी कहा–"यदि विशेष भीड़ आ पड़ी हो तो लीजिये, हम ही शस्त्र ग्रहण किये लेते हैं। हमने तो अपना सब–कुछ अर्जुन के ऊपर वार रखा है। उपप्लव में ही प्रतिज्ञा हो गई थी कि यदि यह चाहे तो मैं अपनी बोटी–बोटी कटा दूँ। अब यदि अर्जुन पराक्रम करे तो भीष्म का मारा जाना निश्चित है। अन्यथा हमें आज्ञा कीजिये। फिर आपके लिए लड़ाई का रुख ही बदल जायगा।"

श्री कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा को तोड़कर शस्त्र ग्रहण कर लें, यह तो किसी के स्वप्न में भी नहीं आ सकता था। इस भाषण का अभिप्राय भी सभी समझते थे। यह अर्जुन के लिए प्रोत्साहना थी। परन्तु अर्जुन का भी अपना व्यक्तित्व था। नहीं माना। श्री कृष्ण दो बार तो शस्त्र उठा ही चुके थे। हाँ, उन्होंने सुदर्शन का प्रयोग नहीं किया। उनका प्रण स्थिर रहा। अर्जुन पहले की अपेक्षा अच्छा लड़ने लगा। फिर भी दादा आखिर दादा ही थे। कृष्ण के प्रस्ताव को सुनकर अर्जुन का हृदय अत्यन्त खिन्न हुआ। वह खिसियाना होकर बोला–"माधव कुल के लाल! मैं इस बूढ़े बाबा से कैसे लड़ूँ? बचपन में खेलते–खेलते मैंने अपने मिट्टी से लिथड़े शरीर से पितामह की गोद को कई बार मैला किया है। गोद में चढ़ते–चढ़ते मैंने कहा–बापू! बाबा ने उत्तर दिया–तेरा बापू नहीं, मैं तो तेरे बाप का बापू हूँ। उन्हें मैं कैसे मार गिराऊँ? कदापि नहीं। सारी सेना मर जाय, मैं मर जाऊँ, विजय हो न हो, आप कुछ भी कहिये, मैं भीष्म बाबा का वध नहीं करूँगा।"

श्री कृष्ण ने उपप्लव की बात दुहरायी, और बृहस्पति के प्रमाण से कहा कि आततायी बड़ा हो, बूढ़ा हो, गुणी हो, उसे मार ही डालना चाहिए। यही क्षत्रिय का धर्म है। परन्तु वे अब यह जान गए कि बाबा का वध अर्जुन करेगा नहीं।

अर्जुन ने प्रस्ताव किया कि "आज के युद्ध का प्रमुख योद्धा शिखण्डी को बना दीजिये। वह भीष्म से दो–दो हाथ करे। मैं उसकी सहायता करूँगा। दूसरे महारथियों को रोकना मेरा काम था। भीष्म के सम्मुख शिखण्डी हो।" शिखण्डी पाण्डवदल के मुख्य योद्धाओं में से था। युद्ध होने से पहले भीम ने तो

www.thearyasamaj.org

प्रस्ताव ही किया था कि पाण्डवदल का मुख्य सेनापति शिखण्डी हो। दुर्योधन ने भीष्म से दोनों सेनाओं के महारथियों की जब गणना कराई थी, तो उन्होंने शिखण्डी को भी पाण्डवों के महारथियों में परिगणित किया था।

अर्जुन के प्रस्तावानुसार शिखण्डी भीष्म से भिड़ने को अग्रसर हुआ। पाण्डवदल के और योद्धा इसके पीछे-पीछे चले। अर्जुन ने भी अपना स्थान सँभाला। भीष्म पर यह भीड़ पड़ी देख कौरवदल के महारथी उनकी सहायता को निकले। अर्जुन की पहले तो दु:शासन से मुठभेड़ हो गई। इसके पीछे वह औरों से दो-दो हाथ करता रहा, बीच-बीच में भीष्म पर भी वार कर लेता था। अन्त में उसे सात वीरों-द्रोण, कृतवर्मा, जयद्रथ, भूरिश्रवा, शल, शल्य, भगदत्त से एकसाथ जुट जाना पड़ा। अब सात्यकि, भीमसेन, धृष्टद्युम्न, विराट् और द्रुपद उसकी सहायता को पहुँचे। अर्जुन ने भीष्म से लड़ने का एक ही गुर पकड़ रखा था। वह यह कि उसे स्वयं न छेड़ना, उसका धनुष तोड़ देना। इससे पूर्व भी वह यही करता रहा था। अब भी उसने ऐसा ही किया। पितामह ने क्रोध में आकर अर्जुन के रथ पर एक बड़ी भारी शक्ति का वार किया। अर्जुन ने उस शक्ति को भल्ल नामक पाँच बाणों से छेदकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। भीष्म नए धनुष से उस पर तीर बरसाने लगा। अर्जुन ने बाणों को बाणों से रोका और भीष्म का धनुष फिर तोड़ दिया। यही कौतुक कई बार हुआ। यहाँ तक कि भीष्म के पास और धनुष रहा ही नहीं। उधर शिखण्डी अपना काम किये जा रहा था। परिणाम यह हुआ कि भीष्म बाबा रथ से नीचे आ गिरे। वे अब जी तो रहे थे, पर लड़ने के नितान्त अयोग्य थे। यही पाण्डवों को अभीष्ट था। वे उन्हें लड़ने के लिए अशक्त ही देखना चाहते थे। युद्ध का नियम भी यही था कि गिर पड़े शत्रु पर प्रहार नहीं करना।

हम लिख आए हैं कि भीष्म अपने-आपको अर्जुन और कृष्ण के सिवा किसी से पराजित नहीं समझते थे। अर्जुन को युद्ध-विद्या में इतना कुशल देखकर उन्हें प्रसन्नता होती थी। वे गिरे तो शिखण्डी के बाणों से, परन्तु इस बाण-प्रहार में करामात शिखण्डी के बल की नहीं, अर्जुन के युद्ध-कौशल की थी। दु:शासन से भीष्म ने कहा भी-"इस प्रकार मर्मस्थलों में घुसनेवाले, कवच को चीरकर शरीर को फाड़ देनेवाले, एकसाथ गिरकर मूसल की तरह शरीर को निरे बोझ से ही कुचल देनेवाले बाण शिखण्डी के नहीं, अर्जुन के हैं।" वह उनके धनुष तोड़-तोड़कर उन्हें प्रतिप्रहार के अयोग्य न बना देता तो ये बाण उनके शरीर तक जाने ही कहाँ पाते। अर्जुन ने बाबा पर बाणा नहीं चलाए, परन्तु वे चल गए ही। शिखण्डी के बाण वास्तव में उसी के थे। बूढ़े बाबा को शर-शय्या पर सुलाने का श्रेय, महाभारतकार ने तो शिखण्डी ही को दिया है, परन्तु तत्त्वज्ञ भीष्म ने अपने स्वर्गारोहण का सेहरा अपने पोते के ही सिर बाँधा। सायंकाल हो ही गया था। युद्ध यथा-नियम बन्द हो गया। पाण्डवों ने कुछ समय हर्ष के शंख बजाए। उनका सारा दल नाचा-कूदा। फिर शीघ्र शर-शय्या-शायी पितामह के गिर्द सब इकट्ठे हो गए। दोनों पक्षों के राजाओं ने पितामह को अभिवादन किया। घायल बाबा का सिर नीचे लटक रहा था। सिरहाने लाए गए, परन्तु भावुक बाबा को अपने पोते की धनुर्विद्या का एक और चमत्कार देखना अभीष्ट था। अर्जुन को बुलाया और कहा-"जैसी शय्या दी है वैसा ही सिरहाना भी दो।" अर्जुन ने कमान में चिल्ला चढ़ा तीन

-शेष पृष्ठ सं. 21 पर

www.thearyasamaj.org

कर्म संन्यास ध्यान योग

लेखक: डॉ0 सोमदेव शास्त्री, मुम्बई

यथार्थ द्रष्टाः– सांख्य अर्थात् संन्यास योग (कर्मों का त्यागना) और कर्मयोग (कर्म से जुड़ना) इन दोनों मार्गों के बारे में गीता में वर्णन किया जा रहा है। दोनों का लक्ष्य 'बन्धन से मुक्त होना' एक ही है। बन्धन से मुक्त होने के लिये ज्ञानी या **संन्यासी** कर्मों का संन्यास (त्याग) इसलिये करता है कि कर्म न करने से कर्म के फल को भोगने के लिये बन्धन में नहीं आना पड़ेगा। **कर्मयोगी** अपना पूरा ध्यान कर्म पर इसलिये देता है कि फल कैसा ही प्राप्त हो उसे ईश्वर प्रदत्त प्रसाद समझकर स्वीकार कर लेता है। फल के प्रति आसक्ति नहीं रखता है इसीलिये फल के प्रभाव से मुक्त रहता है बन्धन में नहीं आता है। इस तरह दोनों ही मार्गों का एक ही लक्ष्य है यह गीता ने स्पष्ट किया है। **सांख्य मार्ग** वाले अर्थात् कर्मों का त्याग करने वाले ज्ञानी **संन्यासी** जिस स्थिति को प्राप्त करते हैं, उसी स्थिति को **कर्मयोगी** प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति सांख्य और योग दोनों को एक ही देखता है अर्थात् एक ही समझता है वही ठीक (यथार्थ रूप से) देखता है।

कर्म संन्यास और कर्मयोग पृथक् नहीं :– जो लोग इन दोनों मार्गों (कर्मसंन्यास और कर्मयोग) को अलग–अलग समझते हैं वे नासमझ हैं, बालक बुद्धि के हैं। इस विषय में गीता में लिखा है कि बाल बुद्धि के लोग सांख्य (ज्ञान संन्यासी) योग और कर्मयोग को पृथक् बतलाते हैं, किन्तु पण्डित लोग ऐसा नहीं बतलाते हैं। जो व्यक्ति इन दोनों में से किसी एक मार्ग पर भी ठीक तरह से चलने लगता है वह दोनों का फल प्राप्त कर लेता है। अर्थात् दोनों ही मार्गों का एक ही उद्देश्य है। दोनों ही मार्गों में से किसी भी मार्ग पर चलने से मनुष्य बन्धन मुक्त हो जाता है। जो मार्ग जिसके लिये अनुकूल हो अर्थात् जो जिस मार्ग का अनुसरण करे वही उसके लिये श्रेयस्कर है किन्तु दोनों मार्गों में कर्मसंन्यास का मार्ग बहुत ही कठिन है।

कर्मयोग प्रशंसनीय :– कर्म का त्याग करना–ज्ञान मार्ग पर चलते हुए **कर्म ही नहीं करना** यह बहुत ही कठिन मार्ग है, इससे कर्मयोग का मार्ग सरल है। कर्म करता हुआ मनुष्य फल की आसक्ति को छोड़ दे तो फलों के बन्धन से स्वतः ही मुक्त हो जायगा। इसलिये कर्मयोग से भी वही लक्ष्य प्राप्त हो जाता है जो संन्यास या ज्ञानयोग से प्राप्त होता है। इस विषय में गीता में लिखा है कि ज्ञानयोग और कर्मयोग दोनों ही परम कल्याण करने वाले हैं परन्तु इन दोनों में से कर्म को त्याग देनेवाले ज्ञानयोग की अपेक्षा कर्मयोग (निष्काम कर्म) अधिक अच्छा है। **निष्काम भाव** से कर्म करने वाले कर्मयोगी का जीवन आदर्श और पवित्र हो जाता है और समस्त प्राणियों में अपनी आत्मा का अनुभव करने लगता है तथा दुःखों को दूर करने में प्रयत्नशील हो जाता है।

कर्मयोगी का जीवन व्यवहारः– गीता में लिखा है कि ऐसे **कर्मयोगी** का आत्मा पवित्र हो जाता है वह

www.thearyasamaj.org

सब प्राणियों के कल्याण के लिये कर्म करता हुआ भी उसमें लिप्त नहीं होता है। जो कर्मयोगी है वह तत्व को जाननेवाला है इसलिये उसे देखते हुए, सुनते हुए, सूंघते हुए, श्वांस लेते हुए, खाते हुए, सुनते हुए, स्पर्श करते हुए, चलते हुए, सोते हुए यही समझना चाहिये कि मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ। वह यही मानता है कि केवल इन्द्रियाँ अपने विषयों में संलग्न हैं।

निष्काम और सकाम कर्मी:– जो कर्मयोगी फल की आसक्ति को त्याग कर स्वयं को ब्रह्म को अर्पण कर के कर्म करता है वह पाप में लिप्त नहीं होता, ठीक ऐसे जैसे कमल का पत्ता पानी में रहता हुआ भी पानी से अलिप्त रहता है। अर्थात् कर्मयोगी कर्मों के अनुकूल या प्रतिकूल फल से अथवा सांसारिक प्रभावों से प्रभावित नहीं होता है। वह तो अपना धर्म या कर्तव्य समझकर कर्म में लगा रहता है। वह बन्धन मुक्त हो जाता है और जो (सकाम) व्यक्ति फल की कामना से प्रेरित होकर फल में आसक्त हो कर कर्म करता है वह **बन्धन में पड़ जाता** है।

शरीर देवों का नगर:– कर्मयोगी तो सब कर्मों के फल को मन से त्यागकर अपने को वश में रखते हुए इस **नौ दरवाजे वाले शरीर रूपी नगर में** सुख से निवास करते हैं। गीता में शरीर को नौ दरवाजे का नगर बताया है। अथर्ववेद में भी शरीर के बारे में लिखा है कि आठ चक्र और नौ दरवाजों वाली यह देवताओं की पवित्र नगरी अयोध्या है। दो आंख, दो कान, दो नासिका द्वार, मुख, मल, मूत्र त्यागने के दो स्थान, इस प्रकार शरीर में ये नौ दरवाजे हैं। कर्मयोगी मन और इन्द्रियों को वश में करके निष्काम भाव से जब इस शरीर से कर्म करता है तब यह शरीर देवताओं का नगर बन जाता है। उस शरीर में रहनेवाले कर्मयोगी को सामान्य जन देवता मानने लगते हैं।

भेदभाव की समाप्ति:– कर्मयोगी संसार के प्राणिमात्र में समान रूप से आत्मतत्त्व को देखने लगता है। अपनी आत्मा के समान ही वह दूसरे प्राणियों की आत्मा को समझने लगता है। ऊँच, नीच, छोटे, बड़े का भेद भाव समाप्त हो जाता है। इस विषय में लिखा है कि वह पण्डित हो जाता है, उसका अज्ञान नष्ट हो जाता है वह समदर्शी हो जाता है अर्थात् सबको एक दृष्टि से देखता है। विद्या तथा विनय से युक्त ब्राह्मण में गाय, हाथी, कुत्ते तथा चाण्डाल में उसकी भेद बुद्धि नहीं रहती है वह सबको समान देखता है। सभी में आत्मा तो उसके समान ही है। वेद में लिखा है कि जब मनुष्य को सभी प्राणियों में एक आत्मतत्त्व का बोध होने लगता है तब उसका मोह और शोक समाप्त हो जाता है।

कर्मयोगी द्वन्द्वों से ऊपर उठ जाता है वह प्रिय वस्तु को प्राप्त करके प्रसन्न नहीं होता है और अप्रिय वस्तु को प्राप्त करके उद्विग्न अर्थात् दुःखी या परेशान भी नहीं होता है।

दुःख का कारण भोग:– सांसारिक विषय वासनाओं से कर्मयोगी क्यों दूर रहता है वह उनसे प्रभावित क्यों नहीं होता है इस विषय में श्रीकृष्ण अर्जुन को समझा रहे हैं कि हे अर्जुन! बाह्य विषयों के स्पर्श (संयोग) से जो सांसारिक भोग प्राप्त होते हैं वे दुःख को ही पैदा करते हैं। इन भोगों का आदि और अन्त है अर्थात् ये हमेशा रहने वाले नहीं हैं इसलिये बुद्धिमान् व्यक्ति इन भोगों में संलग्न नहीं होते हैं।

www.thearyasamaj.org

विवेकशील व्यक्ति जानता है कि भोग की स्मृति भी दुःख का कारण होती है, फिर भोग भी तो क्षणिक है, हमेशा रहने वाला नहीं है, उसके लिये प्रयत्न करना बुद्धिमत्ता नहीं है इसलिये कर्मयोगी सांसारिक भोगों से विरक्त हो जाता है।

ब्रह्मप्राप्ति का साधन निष्काम कर्म:– कर्मयोगी बाह्य विषयों में सुख खोजने की अपेक्षा अपने अन्दर सुख खोजने का प्रयत्न करता है। इस विषय में गीता में लिखा है कि 'जो व्यक्ति अपने भीतर ही सुख प्राप्त कर लेता है अपने भीतर ही आराम और प्रकाश को प्राप्त कर लेता है वह ब्रह्म को प्राप्त कर मुक्ति को पा जाता है। ब्रह्म को प्राप्त करने के लिये निष्काम कर्म एक माध्यम है। जिस प्रकार निष्काम भाव से परमात्मा ने संसार बनाया उसके बनाये हुए संसार में सूर्य, पृथ्वी जलादि सदा निष्काम भाव से दूसरों के उपयोग में आ रहे हैं। पानी की एक–एक बूंद दूसरों के कल्याण में समाप्त हो रही है। इसी क्रम में कर्मयोगी भी अपने आपको जोड़ता हुआ स्वार्थ त्याग करके, दूसरों के कल्याण में अपने समस्त कर्मों को करता है। कर्म के फल को प्रभु का दिया हुआ प्रसाद समझकर स्वीकार कर लेता है। फल की आसक्ति का त्याग कर देता है। यह आत्मिक बल उसे ब्रह्म से प्राप्त होता है।

ब्रह्म की उपासना:– ब्रह्म की उपासना कैसे करें इस विषय में गीता में पंचम अध्याय के अन्तिम श्लोकों में मार्ग निर्देश किया है कि बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोककर काम क्रोधादि से रहित होकर, अपनी इन्द्रिय मन बुद्धि आदि को वश में करके, नासिका में चलनेवाले प्राण, अपान को समान करके अर्थात् प्राणायाम करके, अपनी दृष्टि को भौहों के बीच जमाकर अर्थात् ध्यान लगाकर मोक्ष पाने के लिये जो कटिबद्ध हो जाता है उसे ब्रह्मप्राप्ति के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दीखता, वह मुनि शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त करता है। ऐसा कर्मयोगी हमेशा दूसरे प्राणियों के हित में ही लगा रहता है।

❀❀❀

सूचना

मई व जून 2011 व 2012 की दो माह की पत्रिकायें सदैव की भांति गत वर्ष भी नहीं भेजी गई थीं। क्योंकि इन दो माह के बदले में विशेषांक प्रकाशित किया जाता है। अतः पाठकों को जानकर प्रसन्नता होगी कि वर्ष 2011 व वर्ष 2012 का विशेषांक **'नित्यकर्मविधि'** के रूप में पाठकों को भेजा जा रहा है। विलम्ब तो हुआ है लेकिन आप निराश न हों शीघ्रातिशीघ्र वर्ष 2013 व वर्ष 2014 का विशेषांक भी आपको अवश्य ही भेजा जायेगा। मात्र डाकव्यय की वी. पी. पी. द्वारा ही यह विशेषांक पहुंचना संभव है इसलिये आपसे प्रार्थना है कि जैसे ही **'सत्यप्रकाशन' से वी. पी. पी.** आपके घर पहुँचे तो छुड़ाने का कष्ट अवश्य करें। ताकि आप और हम प्रसन्न रहें।

–व्यवस्थापक

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

आर्ष पाठविधि की उपयोगिता और प्रासंगिकता

लेखकः डॉ0 सुरेन्द्रकुमार आचार्य, अलियाबाद, मं.शामीरपेट, जिला–रंगारेड्डी (आं. प्र.)

3. आर्ष पाठविधिः परम्परागत प्राचीन पाठविधि

महाभारत और कुछ बाद तक आर्षपद्धति से ही शिक्षा ग्रहण की जाती थी। कर्मणा वर्ण–व्यवस्था सामाजिक–व्यवस्था थी। उस समय यह देश विद्या में विश्वगुरु कहलाता था, धन–समृद्धि में स्वर्णभूमि और सोने की चिड़िया, बल में अनेक देशों का विजेता था। किसी की इधर आँख उठाने की हिम्मत नहीं पड़ी। उस पद्धति से ब्रह्मा जैसे विद्याविशेषज्ञ; स्वायम्भुव मनु, वैवस्वत मनु, जनक जैसे राजर्षि, चाणक्य से राजनीतिज्ञ, मय और त्वष्टा जैसे शिल्पज्ञ, नल, नील जैसे सेतु विशेषज्ञ; वाल्मीकि, व्यास, कालिदास जैसे महाकवि; चरक, सुश्रुत, धन्वन्तरि, बाग्भट्ट जैसे आयुर्वेदज्ञ; अर्जुन जैसे धनुर्धारी; राम, कृष्ण जैसे पुरुषोत्तम व ज्ञानी; षड्दर्शनकारों जैसे दार्शनिक सिद्धान्तदाता; वीर हनुमान जैसे शास्त्र और शस्त्र मे समान रूप से निपुण; पाणिनि, पतंजलि जैसे वैयाकरण; भारद्वाज जैसे विमानविद्या विशेषज्ञ; आर्यभट्ट जैसे खगोलशास्त्री उत्पन्न हो चुके हैं, जिन्होंने विश्व को नये आविष्कार एवं अद्भुत देन ही हैं। विश्व आज भी उनको स्मरण करता है। फिर वह पद्धति अमनोवैज्ञानिक और अनुपयोगी कैसे कहला सकती है? अपितु जब से यह पाश्चात्य पद्धति चालू हुई है, तब से विश्वस्तर का कोई भी ऐसा व्यक्ति निर्मित नहीं हुआ है जो किसी नयी देन के लिए विश्वविख्यात हुआ हो। शासकीय इच्छा और अनुकूल परिस्थितियाँ हों तो आज भी उस पद्धति से विशेषज्ञ उत्पन्न हो सकते हैं।

प्राचीनकाल में जितनी भी नैतिक, आध्यात्मिक, भौतिक, वैज्ञानिक अथवा ज्ञान–सम्बन्धी उन्नति थी।, महर्षि दयानन्द उसे आर्ष शास्त्रों के अध्ययन–अध्यापन के कारण मानते हैं। आज भारत की सर्वतोमुखी अवनत दशा का कारण उन ग्रन्थों को त्याग देना है। महर्षि इस बात को स्वयं स्पष्ट करते हैं–

(क) "विचारना चाहिये–हे मनुष्य लोगो! ऊपर लिखी व्यवस्था पर आत्मा में ध्यान देकर देखो कि परमेश्वर ने वेद द्वारा हम सब मनुष्यों को सुखी होने के लिये कैसा सत्योपदेश किया है, कि जिस में चलने से अपने लोगों में सब दुःखों का नाश और सत्य सुखों की वृद्धि बनी रहे। क्या तुम ने नहीं सुना कि अपने पुरुष ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त महर्षि और स्वायंभुव (मनु) से लेके महाराजे युधिष्ठिर पर्यन्त राजर्षि लोग वेदोक्त धर्म के अनुकूल चलके कैसे–कैसे बड़े विद्या और चक्रवर्ती राज्य के असंख्यात सुखों को भोगते, विमान आदि सवारियों में बैठते, सर्वत्र विद्या और धर्म को फैला कर सदा आनन्द में रहते थे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, वर्ष, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, दिन, रात, प्रहर, मुहूर्त, घड़ी, पल,

www.thearyasamaj.org

क्षण, आंख, नाक, कान आदि, शरीर, औषधि, वनस्पति, खाना, पीना आदि व्यवहार ज्यों के त्यों बने हैं और हम आर्यों का हाल क्यों बदल गया है? हे मनुष्यों! आप लोग अत्यन्त विचार करके देखो कि जिसका फल दुःख वह धर्म, और जिसका फल सुख वह अधर्म कभी हो सकता है? अपना हाल अन्यथा होने का यही कारण है कि जिसको ऊपर लिख चुके-वेदविरुद्ध चलना। और उस प्राचीन अवस्था की प्राप्ति कराने वाला कारण वेदोक्तानुकूल चलना है।

-(ऋ. द. प. वि. भाग 1, पृ. 243)

(ख) "परन्तु आर्यावर्त देश पर मुझ का (= मेरा) बहुत पश्चात्ताप है, क्योंकि इस देश में प्रथम बहुत सुखों और विद्याओं की उन्नति थी। बहुत ऋषि-मुनि, बड़े-बड़े विद्वान् इस देश में हुये थे, जिनके अच्छे-अच्छे काम और अच्छे-अच्छे विद्यापुस्तक अब तक चले आते हैं और अच्छे-अच्छे राज-धर्म के चलाने वाले राजा भी हुए हैं, जिन्होंने कभी पक्षपात का कोई कार्य नहीं किया, किन्तु सदा धर्म न्याय में ही प्रवृत्त हुये हैं। सो देश इस वक्त ऐसा बिगड़ा है कि इतना बिगाड़ किसी देश में देखने में नहीं आता है।

सो हमारी प्रार्थना सब आर्यावर्तवासी राजा और प्रजा से है, कि उक्त बुरे कामों को छोड़के अच्छे कामों में प्रवृत्त होवे और जो कोई अन्यदेशीय राजा आर्यावर्त में है, उससे भी मेरी प्रार्थना यह है कि इस देश में सनातन ऋषि-मुनियों के किये उक्त ग्रन्थ और ऋषि-मुनियों द्वारा की गई वेदों की व्याख्या, उसी रीति से वेदों का यथावत् अर्थज्ञान और उनमें उक्त जो व्यवहारों के नियम उनकी प्रवृत्ति यथावत् करावे। इसी से यह देश सुधरेगा, अन्यथा नहीं" -(ऋ. द. प. वि. भाग 1, पृ. 41)

रामायण और महाभारत काल में आर्ष शिक्षा पद्धति

वैदिक काल से महाभारत तक भारत के सम्पूर्ण इतिहास को उठाकर देख लीजिए, सदा वेदादि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन हुआ है और उसी पाठविधि से उनकी धर्म, अर्थ, काम, मोक्षात्मक उन्नति हुई है। यहां विस्तारभय से केवल दो कालों के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

(क) रामायणकाल में राजा दशरथ का परिचय देते हुए उन्हें, "वेदवित्" (बाल 6.1) कहा गया है। अयोध्या के सुशिक्षित, समृद्ध, सभ्य, सुशील निवासियों का परिचय देते हुए कहा गया है, कि अयोध्या में सभी छह अंगों सहित वेदों के ज्ञाता थे कोई भी इससे कम सुशिक्षित नहीं था-**"न अषडङ्गवित् तत्रासीत्"** (बाल 6.15)।

(ख) आगे राम आदि चारों भाइयों की शिक्षाप्राप्ति का विवरण दिया गया है। वहां सब भाइयों को वेदवित्, शूरवीर, धनुर्वेद का ज्ञाता, वैदिकाध्ययन में रत और लोकहित में संलग्न बताया है- **"सर्वे वेदविदः शूराः।" "वैदिकाध्ययने रताः .... धनुर्वेदे निष्ठिता"** (बाल 18/25, 36, 37)। रामायण में आगे राम को अनेक स्थलों पर विद्या व्रतस्नातक **"सांगवेदवित्"** कहकर उसे विधिवत् आर्षपाठविधि की शिक्षा प्राप्त करने वाला वर्णित किया है (अयो. 1/20, 82/11

www.thearyasamaj.org

आदि)।

(ग) शस्त्र और शास्त्र विद्या में समान रूप से पारंगत वीर हनुमान ने भी आर्ष पाठविधि से सम्पूर्ण विद्या प्राप्त की थी। राम उससे बात करने के बाद प्रभावित होकर उसको ऋग्वेदवित्, यजुर्वेदवित्, सामवेदवित् और व्याकरणज्ञ घोषित करते हैं (किष्किन्धा 3/28-33)।

(घ) लंकापति रावण भी विधिवत् विद्या और व्रतस्नातक था तथा वेदादिशास्त्रों का विद्वान् था। अपने राक्षसी आचरण से 'राक्षस' कहलाया। सीतावध से निवृत्त करते हुए बुद्धिमान्, मन्त्री सुपार्श्व रावण को यह कहकर सीतावध न करने का परामर्श देता है कि आप "वेदविद्याव्रतस्नातः" हैं अतः आपको एक स्त्री का वध करना शोभा नहीं देता–"वेदविद्याव्रतस्नातः...... स्त्रियः कस्माद् वधं वीर मन्यसे राक्षसेश्वर" (युद्ध 92/64)।

(ङ) इसी प्रकार महाभारत के मैदान में युद्ध के लिए सन्नद्ध दोनों पक्षों के राजाओं क्षत्रियों का परिचय महर्षि व्यास इन शब्दों में देते हैं–

वेदाध्ययनसम्पन्नाः सर्वे युद्धाभिनन्दिनः।
आशंसन्तो जयं युद्धे बलेनाभिमुखा रणे।। –(महाभारत, भीष्म 1/3)

अर्थात् दोनों सेनाओं में युद्ध के लिए सन्नद्ध खड़े सभी राजा और सेनाधिकारी वेदादि शास्त्रों के अध्ययन से सम्पन्न हैं, सभी युद्ध के लिए तत्पर हैं, और सभी विजय की आशा लगाये हुए हैं।

यह पाठविधि लगभग बौद्धकाल तक इसी प्रकार चलती रही किन्तु उसमें मनुष्यकृत ग्रन्थों का समावेश होने लगा। बाद में धीरे-धीरे मनुष्यकृत ग्रन्थ ही पठन-पाठन में रह गये। उनमें निहित संकीर्ण विचारों से भारत के व्यक्तियों का अनुदित पतन होता गया। समाज का विघटन और राष्ट्र का ह्रास होता गया।

महर्षि ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनिपर्यन्त प्रचलित उसी आर्ष पाठविधि का अनुगमन करते हुए उसे समन्वयात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। महर्षि ने ग्रन्थों की पठन-पाठन विधि और क्रम की जो रूपरेखा दी है, वह एक मुख्य अथवा केन्द्रिक रूपरेखा है। उसका अभिप्राय यह नहीं है कि महर्षि उससे अधिक या कम अध्ययन को स्वीकार नहीं करते अथवा यह चाहते थे कि कोई इससे रत्तीभर भी इधर-उधर न हो। उन्होंने एक मुख्य मार्ग दिया है, वह मार्ग आवश्यक है, किन्तु चलने में कुछ समायोजन हो सकता है। उन्होंने मुख्य विषय के रूप में कुछ शास्त्रों का परिगणन किया है, उनके सहयोगी और समृद्ध ग्रन्थ या विद्या के रूप में अन्य विषय भी हो सकते हैं। केवल पठन-पाठनविधि को पढ़कर महर्षि की पाठविधि को पूर्णता से नहीं समझा जा सकता। उसको व्यापक रूप से समझने के लिए उनके अन्य वचनों पर भी ध्यान देना होगा और उनके मूल सिद्धान्तों तथा शिक्षा-नीतियों को भी समझना होगा। महर्षि द्वारा प्रस्तुत पाठविधि में पर्याप्त गम्भीरता, व्यापकता, गुणवत्ता, दूरदर्शिता और व्यावहारिकता है। मुख्य सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए महर्षि ने उसे स्वयमेव पर्याप्त व्यापक और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया है। महर्षि की शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धान्त इस प्रकार हैं–

–(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

'आदिम और लौकिक भाषायें'

लेखकः मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून (उत्तराखण्ड)

लौकिक भाषायें किससे व कैसे उत्पन्न हुई?, यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है, अतः इस पर विचार करते हैं। भाषा की उत्पत्ति के विषय में यही प्रश्न हमारे एक लेख के सन्दर्भ में रायगढ़ छत्तीसगढ़ के श्री अजय शर्मा ने हमसे पूछा है। भाषा के बारे में यह सामान्य बात है कि भाषा शब्दों व वाक्यों से मिलकर बनती है। भाषा का मूल शब्द एवं शब्द का मूल अक्षर व ध्वनियां अथवा वर्णमाला है। अतः यह सत्य सामने आता है कि जब भी कोई भाषा बनेगी या उसका प्रादुर्भाव होगा तो उसमें अक्षर, जो किसी एक ध्वनि को उच्चारित करें, उन ध्वनि समूहों से बने शब्द होंगे। प्रत्येक शब्द का एक मुख्य अर्थ एवं अन्य कई अर्थ भी हो सकते हैं। पूरे वाक्य से किसी एक बात अथवा संक्षिप्त विचार का बोध होता है। इसके पश्चात् यह विचार करना है कि जब सृष्टि बनी तो जो आदिम पुरूष एवं स्त्रियां थीं उन्हें भाषा का ज्ञान कब व कैसे हुआ? दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी हमारे सम्मुख आता है कि क्या बिन भाषा के मनुष्य का काम चल सकता है? यदि चल सकता है तो वह कितने समय तक और कैसे व्यवहार करेगा? तीसरा महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अक्षर, शब्द, भाषा को बनाने के लिए मनुष्य को विचार व चिन्तन करना होगा। विचार व चिन्तन बिना भाषा के हो ही नहीं सकता। अतः **विचार व चिन्तन करने में असमर्थ होने के कारण वह कभी भी भाषा बना ही नहीं सकते। अब यदि मनुष्य भाषा नहीं बना सकते तो उन्हें भाषा किससे प्राप्त हुई?**

इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर यह है कि चिन्तन व विचार, ध्यान, संकल्प-विकल्प, उपदेश व प्रवचन करना चेतन सत्ता द्वारा ही सम्भव होता है। जड़ या भौतिक पदार्थों द्वारा यह पूर्णतः असम्भव है। सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों के अलावा अन्य चेतन सत्तायें पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि थे। यह मनुष्योत्तर शरीरधारी जातियां व योनियाँ तो भाषा बना ही नहीं सकती क्योंकि आज तक भी उनकी कोई भाषा हमारे सामने नहीं है। अब केवल एक ही चेतन सत्ता बचती है और वह है जिसने यह सारा ब्रह्माण्ड बनाया है। **ब्रह्माण्ड बनाने में ज्ञान व शक्ति की अपेक्षा निर्विवाद है। ब्रह्माण्ड बनाने में जिस ज्ञान व शक्ति का प्रयोग हुआ है उसके लिए एक ऐसी चेतन सत्ता की आवश्यकता है जो सत्य,**

ब्रह्माण्ड बनाने में ज्ञान व शक्ति की अपेक्षा निर्विवाद है। ब्रह्माण्ड बनाने में जिस ज्ञान व शक्ति का प्रयोग हुआ है उसके लिए एक ऐसी चेतन सत्ता की आवश्यकता है जो सत्य, चित्त, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तरयामी, निराकार, अजर, अमर, अभय, नित्य व पवित्रता आदि गुणों से परिपूर्ण हो। यह विशाल ब्रह्माण्ड क्योंकि हमारे सामने प्रत्यक्ष है अतः इस के रचयिता=सृष्टिकर्ता में उपर्युक्त गुणों का होना, जिसे ईश्वर कहा जाता है, का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है।

www.thearyasamaj.org

चित्त, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, निराकार, अजर, अमर, अभय, नित्य व पवित्रता आदि गुणों से पूर्ण हो। यह विशाल ब्रह्माण्ड क्योंकि हमारे सामने प्रत्यक्ष है अतः इस के रचयिता= सृष्टिकर्ता में उपर्युक्त गुणों का होना, जिसे ईश्वर कहा जाता है, का अस्तित्व सिद्ध हो जाता है। ईश्वर का सर्वज्ञ अर्थात् पूर्णज्ञानी होना आवश्यक एवं अपरिहार्य है अन्यथा सृष्टि बन ही नहीं सकती और न ही इसका संचालन हो सकता है। **अतः यह भी सिद्ध होता है कि वह ईश्वर इस संसार के बारे में चिन्तन, मनन व विचार अवश्य करता है एवं इसकी अपनी भी कोई भाषा है।** ईश्वर की वह भाषा वेदों में प्रयुक्त संस्कृत है। यहां तक चिन्तन व विचार हो जाने के पश्चात यह भी अनुमान किया जा सकता है कि सृष्टि के आरम्भ में ऋषियों व मनुष्यों को भाषा की प्राप्ति भी ईश्वर से ही हुई थी। न होती तो मनुष्य स्वयं तो भाषा बना ही नहीं सकता था वह परस्पर कोई व्यवहार भी न कर पाता। अतः उसका भावी जीवन संकट में पड़ जाता और सृष्टि रचना का जो विशाल यज्ञ ईश्वर ने रचा था उसके भी निरर्थक व अर्थहीन होने की सम्भावना थी। अतः यह सिद्ध है कि जिस ईश्वर ने हमारे शरीर में मुँह, जिह्वा, आंखें, मन, बुद्धि आदि अवयव बनाये तो इनके विषय या ऑबजेक्ट भी, जिसमें से बुद्धि, मुंह एवं जिह्वा का एक विषय भाषा का उच्चारण है, ईश्वर द्वारा ही आदि मनुष्यों को प्रदान किया गया था। हम यह भी देखते हैं कि हमारे प्राचीन ग्रन्थों मनुस्मृति, ब्राह्मण, आरण्यक, दर्शन, उपनिषद, रामायण व महाभारत आदि में वेदों की चर्चा है और वह एकमत से वेदों को ईश्वरप्रदत्त ज्ञान मानते हैं तथा हमारे सम्मुख जो तर्क व युक्तियाँ हैं, वह भी वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करती है। इसके लिए हम निवेदन करेंगे कि इस विषय में विस्तार से जानने के लिए जिज्ञासु बन्धु महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थों का अध्ययन करें।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि सृष्टि के आरम्भ में आदिम मनुष्यों को ज्ञान व भाषा ईश्वर से प्राप्त हुई थी। ज्ञान व भाषा परस्पर अन्तर्निहित होने के कारण बिना भाषा के ज्ञान दिया ही नहीं जा सकता था। **अतः ज्ञान अर्थात् 'वेद' एवं भाषा आदिम मनुष्यों को ईश्वर से मिली। यह वही भाषा थी जो कि ईश्वर की अपनी भाषा है जिसमें वह स्वयं विचार व चिन्तन–मनन करता है।** वह आदिम भाषा कौन सी थी तो यह स्वीकार करना होगा कि जो भाषा वेदों में है वही भाषा आदि काल के मनुष्यों की थी। मानव सृष्टि का आरम्भ क्योंकि एक स्थान पर हुआ था, **यह स्थान त्रिविष्टप=तिब्बत माना जाता है,** और उस समय सारी पृथिवी मानवों से रहित, निर्जन थी अतः कालान्तर में परस्पर मतभेद, आपसी कलह व लड़ाई–झगड़ा होने पर लोगों का अन्यत्र जाना आरम्भ हुआ। सृष्टि को बने

आदिम भाषा कौन सी थी इसके लिए यह स्वीकार करना होगा कि जो भाषा वेदों में है वही भाषा आदि काल के मनुष्यों की थी। मानव सृष्टि का आरम्भ क्योंकि एक स्थान पर हुआ था,यह स्थान तिब्बत था, और इसके अलावा सारी पृथिवी निर्जन थी अतः कालान्तर में परस्पर मतभेद, आपसी कलह व लड़ाई–झगड़ा होने पर लोगों का अन्यत्र जाना आरम्भ हुआ। सृष्टि को बने हुए लगभग 2 अरब वर्षों का समय व्यतीत हो रहा है। इस बीच में लोगों की जनसंख्या भी वृद्धि को प्राप्त होती गई और लोगों का अन्यत्र जाना भी जारी रहा जिसका परिणाम यह हुआ कि लोग इस पृथिवी के सभी क्षेत्रों में जाकर बस गये।

www.thearyasamaj.org

हुये लगभग 2 अरब वर्षों का समय व्यतीत हो रहा है। इस बीच में लोगों की जनसंख्या भी वृद्धि को प्राप्त होती गई और लोगों का अन्यत्र जाना भी जारी रहा जिसका परिणाम यह हुआ कि लोग इस पृथिवी के सभी क्षेत्रों में जाकर बस गये। जब व्यक्ति अपने मूल स्थान से दूर जाता है तो उसके आचार-विचार, रहन-सहन, उच्चारण व भाषा आदि में किंचित परिवर्तन होता रहता है। भाषा के उच्चारण में अपभ्रंश होने से मूल शब्दों के सदृश्य अन्य भिन्न व किंचित विकार वाले शब्दों की सृष्टि हो जाती है जो कालान्तर में कई पीढ़ियों के बाद एक नई भाषा या बोली का रूप ले लेती है। इसका प्रमाण यह है कि आज भी दुनियां की प्रायः सभी भाषाओं में संस्कृत के तत्सम एवं अपभ्रंश, विकृत व परिवर्तित शब्द पाये जाते हैं। इन दो अरब वर्षों की दीर्घकालीन अवधि में भिन्न-2 दूरस्थ स्थानों पर वेद की भाषा से भिन्न भाषायें अस्तित्व में आ गईं। इसी प्रकार इनकी लिपियां भी समय-समय पर परिवर्तित होती रहीं और आज विश्व में शतशः लिपियां प्रचलन में हैं जिसका एक कारण मनुष्य की अल्पज्ञता भी है। हम अनुभव करते हैं कि जब हम देहरादून से असम जाते हैं तो असम की भाषा को यहां बोली जाने वाली भाषा से सर्वथा भिन्न पाते हैं। इसका कारण हम देखते हैं कि देहरादून से आगे बढ़ने पर लखनऊ का क्षेत्र आता है, वहां ग्रामों व देहातों में बोली जाने वाली भाषा देहरादून से किंचित भिन्न है और हिन्दी शब्दों का ही उच्चारण भिन्न प्रकार के लहजे में किया जाता है। इसी प्रकार बिहार व बंगाल से होकर जब असम पहुंचते हैं तो असम से बंगला के शब्दों की बहुतायत देखते हैं इससे लगता है कि गंगा के प्रवाह की भांति वह अपने उद्गम में तो पूरी तरह शुद्ध व पवित्र है परन्तु आगे बढ़ने पर इसमें स्थान-स्थान का प्रदूषण मिलने लगता है और वह तदाकार हो जाती है। इसी प्रकार भाषा भी जिस तरफ गई वहां-वहां की विशेषताएं एवं खामियां उसमें सम्मिलित होती गई और फिर वह तदाकार हो गई। आज की विश्व भर की भाषाओं को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। आज की भाषायें किस प्रकार अस्तित्व में आई हैं, यह इस शंका का समाधान है। हम आर्य समाज के विद्वानों से निवेदन करते हैं कि वह इस विषय पर अपने गवेषणापूर्ण लेखों के माध्यम से अवगत करायें जिससे सभी को लाभ होगा। ❁❁❁

पृष्ठ सं. 12 का शेष-

तीर लगाकर इस प्रकार चलाए कि भीष्म के लटक रहे सिर को सिरहाने का-सा सहारा मिल गया। पितामह ने शाबाशी दी।

उस समय सूर्य दक्षिणायन में था, अर्थात् सर्दियाँ थीं। गर्मियाँ आने तक भीष्म घायल पड़े रहे- कवि के शब्दों में शर-शय्या-शायी। तत्पश्चात् उन्होंने प्राण दिये। युद्ध तो आठ ही दिन और रहा। युद्ध की समाप्ति पर युधिष्ठिर, श्री कृष्ण आदि सहित उनके पास उपदेश के लिए फिर आए। भीष्म बुद्धि तथा विद्या के भण्डार थे। आयु बड़ी थी। संसार देखा था। विनीत स्वभाव के थे। जीवन-भर आप्त महात्माओं का संग किया। कई राष्ट्रों को उठते और फिर बैठते देखा था। उन्होंने अपने से पूर्व समाज-शास्त्र तथा राज्य-शास्त्र के महामूल्य मोती सरल-सरल कथानकों के रूप में युधिष्ठिर को अर्पण किये। इन्हीं मोतियों का महा- निधि 'महाभारत' का शान्तिपर्व तथा अनुशासन-पर्व है। वस्तुतः भीष्म का कहा समाज-शास्त्र संसार के नैतिक साहित्य में एक अनुपम प्रतिष्ठा का स्थान पाने का अधिकारी है। ❁❁❁

www.thearyasamaj.org

वृहद विमान शास्त्र
सुन्दर विमान में प्रयुक्त विद्युत यन्त्र का वर्णन
Electric Equipment used in Sunder Viman

लेखकः कृपालसिंह वर्मा, 253 शिवलोक, कंकरखेड़ा, मेरठ (उ0 प्र0) मोबा. 9927887788

किसी प्राचीन किले के खण्डहरों को देखकर ही उसकी भव्यता का आभास हो जाता है। सन् 1918 में पूज्य स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्रजक को राजकीय संस्कृत पुस्तकालय बड़ौदा से महर्षि भारद्वाज द्वारा सूत्र रूप में रचित "यन्त्र सर्वस्व" ग्रन्थ के वैमानिक प्रकरण के कुछ पन्नों की Transcript copy मिली जिसको स्वामी जी ने 'ब्रहद् विमानशास्त्र' का नाम दिया। इस पुस्तक का श्लोकबद्ध भाष्य यति बोधानन्द ने किया था। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद स्वामी जी ने 19-09-1958 ई0 को पूर्ण किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने इस पुस्तक को फरवरी 1959 ई0 को प्रकाशित किया।

वृहद् विमान शास्त्र के पेज 262 से 274 तक विद्युत यन्त्र का वर्णन है।

सांयोजक लोहे (Magnetized Iron) से यथाविधि पीठ (Base) बनावे।

35 वितरित (Vedic Unit of legnth) गोलाकार पीठ बनाकर उसमें घूम से क्रम से पांच केन्द्र (Location) बनाये। उसमें घड़े के आकार जैसे पांच पात्र (Pot) रखें। उन पात्रों के मुख के ऊपर जोड़े। नाल के ऊपर मुख पर मयूखकेशनामक मृग का चर्म बांधे। जो विशेष प्रकार से संशोधित किया हो। चर्म में एक छेद कर पात्रों के मुख पर बांध दे।

(I) पूर्व दिशा के पात्र में भरे जाने वाले पदार्थ–

(1) गधों का मूत्र 16 द्रोण (Vedic Unit of weigth)

(2) खनिज कोयले का अंगार जिसकी उष्णता 16 लिंक (Vedic Unit of Temprature) हो।

(3) लवण (Salt) सर्पविष तथा रवि अर्थात् ताम्बा

(II) पश्चिम दिशा वाले पात्र में निम्न पदार्थ भरे–

(1) 7 भाग विद्युत गम मणि (2) 13 भाग प्राण क्षार अर्थात् नौसादर (3) 22 भाग शश की विष्टा का द्रावक (4) 2 भाग ऊँट का मूत्र (5) 50 लिंक गैण्डे मृग की हड्डियां (6) 30 लिंक गन्धक (7) 16 लिंक चिंचा क्षार इमली का क्षार (8) शक्ति अयस्कान्त (9) 26 लिंक परिणाम मूत्र

(III) उत्तर दिशा वाले पात्र में निम्न पदार्थ भरे–

www.thearyasamaj.org

(1) अपमार्ग के बीजों का तेल 11 भाग (2) 32 सर्पास्थ बीज (3) 40 भाग नागकेशर बीज का तेल (4) अयस्कान्त का तेल 32 भाग (5) दोनों तेलों के तृतीश अध हाथी का मूत्र (6) भास्कर मणी।

(IV) दक्षिण दिशा वाले पात्र में निम्नलिखित पदार्थ भरे–

(1) पिपला मूल रस, वासारस, श्वेत शरपुंखा रस (2) 54 भाग गौ मूत्र (3) कान्त लोहा (4) ज्योतिमणि (5) ज्योति मयूख।

(V) मध्य पात्र में निम्नलिखित पदार्थ भरे–

(1) 117 संख्या वाली तडित मणी। मणि प्रकरण में 117 संख्या पर वर्णित।

इस प्रकार Vedic Battery तैयार हो गयी। इसे Charge करने के लिए शक्तिपूरक यंत्र का निर्माण करें।

विद्युत उत्पन्न करने वाले यन्त्र का निर्माण–

चपल ग्राहक लोहे से शक्तिपूरक यंत्र का निर्माण करे। (Base) 5 बालिस्त लम्बा तथा 8 बालिस्त ऊंचा अर्धचन्द्राकार नीचे का भाग बनाये जिसकी मोटाई 1 बालिस्त हो। इसके मध्य भाग में घड़े के आकार का पात्र बनावे। 3 बालिस्त लम्बा, 5 बालिस्त उठा हुआ। इसी आकार का दूसरा कांच का कवच बनाये। इस पात्र में दो नाल कलश के आकार को उत्तर तथा दक्षिण में स्थापित करें। दोनों नालों के मध्य में दो चक्र स्थापित करे कांच के आवरण सहित। सन्धि कील से दोनों नालों के चक्र को घुमाये। नाले अयस्कान्त (चुम्बक) की बनाये चुम्बक की नाल के अन्दर जब ताम्बे के तारों का चक्र घुमाते हैं तो विद्युत उत्पन्न होती है। दोनों नालों में जोड़ लगाये। दोनों नालों के ऊपर चर्म लपेटे।

शक्ति पूरक पात्र में 32 तोला पारा भरे। 391 संख्या वाली विद्युत मुख मणी पर ताम्बे के तार लपेट कर उसे दो तार संयोजक कीलक (Switch) में लगा दे। दोनों नालों के तार भी संयोग कीलक में लगा दे। दही मथने की तरह इस यंत्र को चलाया जाता है। इससे दोनों नालों में विद्युत उत्पन्न होती है। संयोग कीलक से जुड़े होने के कारण वह विद्युत शक्ति विद्युत मुख मणी में चली जाती है। इसके पश्चात् विद्युत शक्ति बैटरी की तडित मणि में होती हुई वैदिक बैटरी को चार्ज करती है।

वैदिक विज्ञान के इस काल में अनेक प्रकार की मणिया बनायी जाती थी जो विद्युत यंत्रों में काम आती थी। वृहद विमान शास्त्र में लगभग 100 तकनीकी पुस्तकों का सन्दर्भ है। यदि वे तकनीकी ग्रन्थ उपलब्ध होते तो वैदिक विज्ञान को बहुत ही अच्छी प्रकार से समझा जा सकता था। वैदिक विज्ञान की तकनीकी शब्दावली के बहुत अधिक शब्द ऐसे हैं जिन्हें परिभाषित करना अत्यन्त कठिन है।

उपरोक्त वैदिक विज्ञान का Manual Generator है। इसे दही मथने की तरह हाथ से चलाकर बैटरी चार्ज की जाती थी। बैटरी के ऊपर 12 दिन का सूर्यकान्त मणी द्वारा धूप में रखा जाता है। सूर्य प्रकाश का उपयोग उत्प्रेरक के रूप में किया जाता था।

❋❋❋

www.thearyasamaj.org

गतांक से आगे–

धूर्त जन

रचयिता: ओमप्रकाशसिंह, सिकन्दराराऊ, जिला–हाथरस (उ0 प्र0)मोबा. 9411630343

(37)

धूर्त और नेताओं का इस्लाम में काम नहीं,
वहाँ तो उनके खिलाफ सक्त आदेश है।
सत्ता को भी कोई न इस्लाम विरुद्ध बोलता,
पीर का फकीर का रखता चाहे भेष है।
शासन का भी वही होता अधिकारी,
जो कुराना हदीसों का मानता निर्देश है।
उन लोगों का सिर भी काट लिया जाता रहा,
यदि कोई इस्लाम को देता उपदेश है।

(38)

कम्यूनिस्ट धर्म निरपेक्ष है सब हिन्दू में,
मुस्लिम में नहीं कोई धर्म निरपेक्ष है।
मुस्लिमों में नेतागीरी करे कौन कम्यूनिष्ट,?
मुस्लिमों में जो भी है वह धर्म सापेक्ष है।
इस हिन्दू के हित की बात नहीं करे कोई,
वहाँ कोई मुसलमाँ हिन्दू का नहीं पक्ष है।
कौन सत्ता भूख को इस हिन्द को तुष्ट करे,?
हिन्दू लिये मुसलमाँ को करे आपेक्ष है?

(39)

धर्म निरपेक्षता सहिष्णुता के सारे खेल,
ये खेल केवल हिन्दुओं में चल पाते हैं।
धर्म निरपेक्ष धूर्त या जो भी कम्यूनिष्ट हैं,
इस्लाम में ये लोग बहुत मार खाते हैं।
मुसलमाँ धर्म का विरोध करता न कोई,
इस्लाम में ऐसे धूर्त पाये नहीं जाते हैं।

www.thearyasamaj.org

जो मुस्लिम को कष्ट करे, हिन्दू को तुष्ट करे,
वहाँ ऐसे धूर्त तो सिर को कटवाते हैं।

(40)

इस्लाम में जरा भी विरोध की जगह नहीं,
वहाँ आलोचकों के शीश उतार लेते हैं।
हिन्दू धर्म की तरह नहीं है भङ्गागीरी,
वहाँ तो फोरन मौत का फतवा देते हैं।
हिन्दू होके हिन्दू धर्म की जो जड़ काटते,
ऐसे धूर्त जहन्नुम की नाव को खेते हैं।
हिन्दुओं में धूर्त बन जो मौज मस्ती मारते,
वहाँ धूर्त तो मौत का कष्ट सहते हैं।

(41)

धूर्त लोग मजारों पर चढ़ाते हैं चादरें,
मन्दिर पूजा वाले मुस्लिम नहीं पाओगे।
अपने कुकर्मों को धर्म निरपेक्षवादियो,
मुस्लिम देशों में तो बहुत मार खाओगे।
इस्लाम–कुरान की कर देखो बुराई वहाँ,
हम भी देखेंगे कैसे जिन्दा तुम आओगे?
मिलेगा नहीं वहाँ तुम्हें कोई भी सत्ता सुख,
शरीर की बोटी बोटी भी नुचवाओगे।

(42)

भारत में जब तक, हिन्दुओं का बहुमत,
सत्ता सुख भोग धूर्त मालपूआ खा रहे।
हिन्दू की ही काटे जड़, करते उसे वेपर,
जातियों में बाँट–बाँट हिन्दू को सता रहे।
इन धूर्तो के कर्मों से, इनके ही कुकर्मों से,
घुट–घुट हिन्दू लोग जिन्दगी बिता रहे।
यदि कहीं दंगे होवें, हिन्द ही नंगे होवें,
हिन्द में मुस्लिमों से हिन्दू मार खा रहे।

–(शेष अगले अंक में)

www.thearyasamaj.org

"अपने बुरे दिनों को याद रखो"

लेखक: खुशहालचन्द्र आर्य, महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकाता

बुरे दिनों को याद रखोगे तो अच्छे दिन कभी जायेंगे ही नहीं या जायेंगे तो जाने में काफी देर लगेगी। बुरे दिनों को याद रखने का तात्पर्य है कि अपने गरीबी के दिनों को याद रखना, अपने तकलीफ के दिनों को स्मरण रखना। अपने तकलीफ के दिनों को याद रखने से मनुष्य को कई लाभ हैं–

(1) लाभ तो यह है कि उसे कभी भी अभिमान नहीं आयेगा। अभिमान ही पतन की जड़ है। जब मनुष्य का पतन होगा ही नहीं तो अच्छे दिन सदा बनें रहेंगें।

(2) लाभ यह है कि वह ईश्वर को सदा धन्यवाद देता रहेगा यानि वह ईश्वर को सदा याद करता रहेगा। जो व्यक्ति ईश्वर को धन्यवाद देता है, उसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता रहता है वह सदैव उन्नति करता रहेगा। कारण कृतज्ञता ही उन्नति करने का सोपान है जिसके सहारे मनुष्य हमेशा ऊपर चढ़ता ही रहेगा।

(3) लाभ यह है कि उसको अपने कर्तव्य का सदैव ध्यान बना रहेगा और वह सच्चाई और ईमानदारी से अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहेगा जिससे उसका सम्मान बढ़ता जायेगा।

(4) लाभ यह है कि वह मेहनती और परिश्रमी बना रहेगा। काम करने में उसका मन सदा लगा रहेगा। कर्म ही मनुष्य का भाग्य होता है। कर्म करने वाले को भाग्य कभी धोखा नहीं देता और वह व्यक्ति सम्पन्नता व ऐश्वर्य की ओर बढ़ता ही जायेगा।

(5) लाभ यह है कि वह दुर्भाग्य व मिलनसार भी होगा। हर व्यक्ति से प्रेम करेगा और वैर–वैमनस्य से सदा दूर रहेगा जिससे उसकी भरपूर उन्नति होगी।

(6) गुण यह है कि वह धैर्यवान व क्षमाशील भी होगा जो मनुष्य को आगे बढ़ाने में सब से अधिक काम आते हैं।

(7) गुण यह है कि जो धैर्यवान और क्षमाशील होगा वह क्रोधी भी नहीं होगा। क्रोध ही विनाश की जड़ है। इस प्रकार जिस व्यक्ति में यह सात गुण होंगे, उसे उन्नति व समृद्धि के पथ पर चढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। सफलता ऐसे व्यक्ति का स्वागत करती है। उन्नति उसको अपने गले लगाती है। इसकी पुष्टि के लिए एक कथानक प्रस्तुत करता हूँ। वह इसी भांति है।

एक व्यक्ति बहुत गरीब था, पर वह समझदार बहुत था। वह नौकरी करने के लिए किसी सेठ के पास गया और सेठ से कहा कि मेरी हालत बहुत कमजोर है, दो समय की रोटी भी नसीब नहीं होती। आप कृपया मुझे चाहे रोटी–रोटी पर ही रख लीजिये। मैं आपका काम पूरी ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत के साथ करूँगा। आपको किसी प्रकार की शिकायत का मौका नहीं दूँगा। मैं अपनी प्रशंसा अपने

www.thearyasamaj.org

मुख से क्या करूँ? आप एक महीना मुझे काम पर रखकर देख लीजिये फिर आप स्वयं ही जान जाओगे। सेठ बड़ा समझदार था, उस व्यक्ति को अच्छा समझकर उसको अपनी गद्दी में भारी-झाड़ू निकालने के लिए रख लिया। वह व्यक्ति इतनी ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत से काम करता था कि बहुत जल्दी ही मालिक के मुँह लग गया और मालिक ने उसकी उन्नति करके अपना हैड-कैशियर बना दिया यानि रुपये-पैसों का पूरा हिसाब उस व्यक्ति के जिम्मे कर दिया और नौकरी भी काफी बढ़ा दी। इससे पहले नौकरी करने वाले व्यक्ति इस ईमानदार व्यक्ति से ईर्ष्या-द्वेष करने लगे। ये लोग इसको किसी भी प्रकार मालिक की नजरों से गिराना चाहते थे जिससे उसकी उन्नति में बाधा पड़ जावे।

यह व्यक्ति प्रथम में आया था तब उसके पास जो पुराने फटे कपड़े जिनको पहनकर आया था, उन कपड़ों को उसने अपनी टूटी हुई पेटी में रख दिये थे। जब नौकरी लग गई और उन्नति हो गई तब वह दिन में एक बार रात को सोते समय बराबर उस पेटी को खोलकर देखता था और फिर बन्द करके सो जाता था। पुराने नौकरों ने इसकी इस नित्य की क्रिया को देख लिया और उनको यह एक अच्छा अवसर मिल गया जिसकी शिकायत करने से मालिक का मन जरूर आशंकित हो जायेगा। उन सब ने मिलकर मालिक से कहा कि यह नया व्यक्ति जिसको आप बड़ा ईमानदार समझते हैं, यह तो बड़ा बेईमान और चोर है। मालिक ने पूछा कैसे तब उन्होंने कहा कि यह व्यक्ति नित्य रात को सोते समय अपनी एक पेटी के पास जाता है और उसे खोल कर उसमें कुछ रखकर आता है, तो जरूर यह उसमें कुछ चोरी किये हुए रूपये या कोई कीमती चीज रखकर आता है और फिर ताला लगाकर सो जाता है। मालिक ने कहा, यह ऐसा व्यक्ति नहीं है जो चोरी करे। आप लोग ईमानदार और सच्चे व्यक्ति पर झूठा दोष लगा रहे हो। मैं किसी हालत में मान नहीं सकता, तब उन्होंने कहा कि इसमें झूठ की क्या बात है, आप भी देख सकते हैं। तब मालिक ने छिप-छिपकर उस व्यक्ति को 3-4 दिन देखा और उन लोगों की बात सही सिद्ध हो गई। तब मालिक को भी उस व्यक्ति की ईमानदारी पर विश्वास उठ गया और उसे बेईमान समझकर मालिक ने उस से पूछा कि आप नित्य अपनी पुरानी पेटी में क्या रख कर आते हो? मैं अभी तक धोखे में ही रहा और तुमको ईमानदार समझता रहा परन्तु इन लोगों के कहने से मुझे ज्ञात हुआ कि तुम कुछ रकम चोरी करके नित्य तुम्हारी पेटी में रखकर आते हो।

उस ईमानदार व्यक्ति के कोई घबराहट नहीं हुई और निश्चिन्त भाव से मालिक को उस पेटी की चाबी दिखाते हुए कहा ''सेठजी'' यह चाबी उस पेटी की है, आप स्वयं ही उस पेटी को खोल कर देख लेवें कि मैंने उस पेटी में क्या छिपा रखा है? तब मालिक ने उस चाबी से उन सभी पुराने नौकरों के सामने उस पेटी को खोला तो सभी आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने देखा कि उस पेटी में पुराने-फटे कपड़ों को छोड़कर और कुछ नहीं था। तब मालिक ने उस व्यक्ति से पूछा कि आप इस पेटी को नित्य खोल कर क्यों देखते हो? तब उस ईमानदार व्यक्ति ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से जो कुछ कहा वह हृदय को हिला देने वाली बात थी। उसने कहा ''मालिक'' मैं अपनी पुरानी दुर्दशा को नित्य इसलिए देखता था कि कभी हमारे यह दिन भी थे। मैं

-शेष पृष्ठ सं. 30 पर

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश के विरोध में मुसलमानों का जुलूस

लेखकः प्रो0 उमाकान्त उपाध्याय, ईशावास्यम्, पी–30, कालिन्दी, कोलकाता

सन् 1986 ई0 में मुसलमानों के दबाब में सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां पुलिस उठा ले गयी थी। किन्तु पुलिस कमिश्नर ने जब तहकीकात कराई और हमारा–शिष्ट मंडल पुलिस कमिश्नर से मिला और हमने सत्यार्थ प्रकाश का पक्ष पुलिस कमिश्नर के सामने रखा तो पुलिस कमिश्नर ने सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध पुलिस की कार्यवाही को अनुचित घोषित कर दिया और बड़े सम्मान के साथ पुस्तकें हमें लौटा दी गयीं। वार्षिकोत्सव की इस घटना से मुसलमानों के भीतर क्षोभ अत्यधिक बढ़ गया और भीतर ही भीतर मुसलमानों में आग सुलगती रही। थोड़े ही दिनों में विरोध का स्वरूप और भी अधिक उग्र हो गया और मुसलमानों ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबंध लगाने के लिए झण्डा, बैनर लेकर जुलूस निकाला और जमकर नारेबाजी की।

घटना कुछ इस प्रकार हुई। कोलकाता में बड़ा अच्छा जनप्रिय पुस्तक मेला लगता है। कई लाख लोग पुस्तक मेला में जाते हैं। पुस्तक मेला के दर्शक पुस्तकें खरीदते हैं और बहुत सारी पुस्तकें जिन्हें खरीदते तो नहीं, किन्तु देखते हैं, और वहीं खड़े–खड़े पुस्तकों से परिचित होने का अच्छा अवसर पा जाते हैं। कोलकाता का पुस्तक मेला अखिल भारतीय स्तर का होता है और सारे देश के बड़े–बड़े प्रकाशक और विक्रेता अपना–अपना प्रदर्शन करते हैं। कोलकाता की प्रायः सभी धार्मिक संस्थाओं की अपनी–अपनी प्रदर्शनी, दुकान आदि वहां लग जाती है। प्रचार की दृष्टि से आर्यसमाज कलकत्ता भी अपना एक बुक स्टॉल बड़ी सज–धज के साथ पुस्तक मेला में लगाता था। उन दिनों पुस्तक मेला विक्टोरिया मेमोरियल के पूर्व में खुले हुए विशाल मैदान में लगता था। आर्यसमाज के बुक स्टॉल को वैदिक साहित्य का प्रति–निधि रूप में प्रदर्शन करने का आर्यसमाज कलकत्ता के अधिकारियों का प्रयास रहता था। मूल वेद संहिताएं, वेदों के भाष्य, उपनिषद्, दर्शन, अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें वहां प्रदर्शित की जाती थी। बहुत सारे लोग वेदों को खरीदते तो नहीं थे किन्तु वेदों का दर्शन करना धर्म मानकर आर्यसमाज के स्टॉल में आते थे। आर्य समाज का साहित्य हिन्दी, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में उपस्थित रहता था। आर्यसमाज के सिद्धान्त ग्रन्थों को विशेष रूप से स्टॉल में सजाया जाता था। स्वाभाविक था कि स्वामी दयानन्द जी की महत्वपूर्ण पुस्तकें वहां सुलभ रखी जायें। इसी नीति के अनुसार स्वामी दयानन्द जी महाराज की पुस्तकें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि, स्वामी जी की जीवनी एवं उनकी अन्य पुस्तकें महत्वपूर्ण ढंग से प्रदर्शित की जाती थीं। इस प्रचार का यथेष्ट लाभ मिलता था। सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी, बंगला, उर्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं में प्रस्तुत रहता था।

आर्यसमाज के पंडाल में भक्त और विरोधी दोनों प्रकार के लोग आते थे। कुछ उपद्रवकारी

www.thearyasamaj.org

इस्लामी तत्वों ने यह नोट कर लिया कि आर्यसमाज के स्टॉल में सत्यार्थ प्रकाश कई भाषाओं में खुलेआम बिक रहा है। अब यह खबर कोलकाता के उस विरोधी मुस्लिम समुदाय के पास भी पहुंच गयी जो वार्षिकोत्सव पर सत्यार्थ प्रकाश को जब्त नहीं करवा पाये थे और भीतर ही भीतर कुढ़ रहे थे।

इन विरोधी मुसलमानों के मन में भी विरोध की भावना उग्र रूप से काम कर रही थी। वे पुस्तक मेले की प्रतीक्षा कर रहे थे, जब उन्हें पता लग गया कि पुस्तक मेले में आर्यसमाज के बुक स्टॉल पर सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी, उर्दू, बंगला, अंग्रेजी आदि सभी भाषाओं में खुलेआम बिक रहा है तो उनके विरोध की भावना कुछ और अधिक उग्र होने लगी। मुसलमान लीडरों ने सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबंध लगाने की मांग लेकर पुस्तक मेला में जाने और विद्रोह करने का प्रोग्राम बना लिया। सत्यार्थ प्रकाश के विरोध में बैनर, झण्डे, पट्टियां, काले बैच आदि सब चुपके-चुपके तैयार करा लिये गये।

एक शुक्रवार को दोपहर की नमाज के बाद चितपुर रोड पर स्थित बड़ी मस्जिद से जुलूस निकालने की योजना बना ली गयी। शुक्रवार का दिन मुसलमानों के लिए विशेष महत्व का होता है और प्रायः मुसलमान सामूहिक सम्मिलित इबादत करने के लिए मस्जिदों में इकट्ठे होते हैं। पुस्तक मेला के दौरान उसी कालावधि में शुक्रवार के दिन नमाज के बाद खूब गरमा-गरम उत्पाती व्याख्यान हुए और 300-400 मुसलमान बैनर झण्डा, पट्टियां लिए बाजुओं में विरोध के लिए काली पट्टी बांधे जुलूस की शक्ल में चितपुर रोड सड़क पर आ गये। सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध जोशीले नारे लगाते हुए पुस्तक मेला की ओर चल पड़े।

चितपुर की मस्जिद से पुस्तक मेला की ओर जाने के लिए पुलिस की हेडक्वार्टर लालबाजार के बगल से सड़क जाती है। स्वाभाविक है कि पुलिस की हेडक्वार्टर में यह खबर पहुंच गयी होगी औरर हमारा अनुमान है कि पुलिस कमिश्नर ने पुस्तक मेले में शान्ति सुव्यवस्था की दृष्टि से निर्देश दे दिया होगा कि जुलूस को पुस्तक मेला में पहुंचने से पहले सुविधाजनक जगह पर रोक दिया जाये और पुस्तक मेला में कोई व्यवधान आने न पावे। जो भी हुआ हो पुलिस के शासन सुव्यवस्था की बात है, हम तो परिणाम को देखकर अनुमान ही कर सकते हैं।

अस्तु, चितपुर की बड़ी मस्जिद से ढाई-तीन कि0 मी0 दूरी तक जुलूस विरोध और विक्षोभ प्रदर्शन करता हुआ रानी रासमणि रोड तक गया वहां पुलिस ने जुलूस को रोक लिया। थोड़ी देर नारे-बाजी और लेक्चर बाजी हुई। जुलूस जैसे गया था वैसे ही तितर-बितर हो गया किन्तु यह समाचार पुस्तक मेला के अधिकारियों और प्रबंधकों तक पहुंच गया। दैनिक पत्रों में भी छप गया।

कोलकाता महानगर में आर्यसमाज एक धार्मिक, समाज सुधारक, समाज सेवी संस्था के रूप में प्रसिद्ध है। आर्यसमाज के विद्यालय, आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव सबकी जनता में प्रतिष्ठा है। आर्यसमाज ने देश के विभाजन के पूर्व और विभाजन के समय एवं विभाजन के पश्चात् बड़ा प्रतिष्ठित रिलीफ का कार्य किया है। बंगाल में बाढ़ तो प्रायः आती ही रहती है और दैवी, आंपदाओं के समय बाढ़, भुखमरी देश के विभाजन, विभाजन के पश्चात् शरणार्थी समस्या, साम्प्रदायिक दंगों के समय आर्यसमाज की

www.thearyasamaj.org

रिलीफ व्यवस्था का सुनाम कोलकाता के लोगों में अच्छा यश पाया है। सरकार भी आर्यसमाज के इस सेवाकार्य, सुधार के कार्य शिक्षा के कार्य आदि देखकर आर्यसमाज को सम्मान की दृष्टि से देखती है। मुसलमानों के इस विरोध के समय भी पुलिस और सरकार में आर्यसमाज की यह भूमिका काम कर रही थी। मुस्लिम कठमुल्ले तो झगड़ालू होते ही हैं यह सबको विदित है। पुलिस कमिश्नर पर पिछले वर्ष की घटना का, हमारे शिष्ट मण्डल का प्रभाव रहा ही होगा।

पुस्तक मेला के व्यवस्थापक इस विरोध प्रदर्शन की घटना के बाद आर्यसमाज के स्टॉल पर आये और उन्होंने भी सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक देखी। स्टॉल पर हमारे प्रबंधक से कह गये कि आर्य समाज का कोई अधिकारी आये तो हमसे भेंट करवाना। हमारे पास फोन आया और हम अगले दिन सायंकाल के समय पुस्तक मेला में गये। यूं भी, रोज तो नहीं, किन्तु कई बार हम व्यवस्था देखते, स्टॉल की सफलता का जायजा लेने पुस्तक मेला में जाते ही थे। अगले दिन प्रातःकाल कोलकाता के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक स्टेट्समैन में हमने यह खबर पढ़ भी ली थी।

अयाचित वरदानः– हम जब पुस्तक मेला में गये और प्रबंधक से मिले तो वे कुछ अधिक उत्साह और प्रसन्नता की मुद्रा में थे। बातचीत के दौरान हमने उन्हें स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज तथा अपने साहित्य के संबंध में थोड़ी अधिक जानकारी दी। आज से 25 वर्ष पहले बंगाल की उस पीढ़ी के लिए सौहार्दवादी का डाइरेक्ट एक्शन–डे–सीधी कार्यवाही पूर्वी बंगाल से हिन्दू शरणार्थियों का पलायन आदि भूला न था। पुस्तक मेला के प्रबंधक ने बड़ी सहानुभूति से बात की और हमें आश्वासन दिया कि पुस्तक मेला में हम कोई उत्पात नहीं होने देंगे।

मुसलमानों का यह विरोध प्रदर्शन और समाचार पत्रों में इसकी खबर से उस वर्ष सत्यार्थ प्रकाश की खूब बिक्री हुई। बंगला और उर्दू में भी सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां खूब धड़ल्ले से बिकती रहीं। हमारा भी उत्साह बढ़ा। आर्यसमाज के कार्यकर्ता अब और मुस्तैदी से व्यवस्था संभालने लगे। मुसलमानों का विरोध हमारे लिए वरदान सिद्ध हुआ और सत्यार्थ प्रकाश का आशा से अधिक प्रचार हुआ। ❋❋❋

पृष्ठ सं. 27 का शेष–

अपने दुर्दिनों को याद करके आगे वाले भविष्य को उज्ज्वल बनाने की इच्छा को बलवती बनाता था और मन में सोचता था कि यदि तुमने मालिक से किसी किस्म की बेईमानी, चोरी, शैतानी की तो फिर तुम्हारे वही दिन आ सकते हैं, इसलिए इन फटे–पुराने कपड़ों को देखकर मुझे अपने कर्त्तव्य का बोध होता था और मैं सब प्रकार की बेईमानी, चोरी, शैतानी न करने का निश्चय करता था और अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए और अधिक ईमानदारी, सच्चाई और मेहनत से काम करते रहने की भावना को मजबूत बनाता था।

यह सुनकर मालिक का हृदय गद्‌गद हो गया और उसे प्रेम से अपने गले लगा कर अपनी भूल की क्षमा माँगी। उस व्यक्ति ने कहा ''मालिक'' आप तो मेरे अन्नदाता हो, मैं आपको क्षमा करने वाला कौन हूँ। मैं तो अपने साथियों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने मेरी सच्चाई व ईमानदारी को प्रत्यक्ष करने में सहयोग दिया है। यह है बुरे दिनों को याद रखने से लाभ। ❋❋❋

www.thearyasamaj.org

क्या ईश्वर नहीं है?

ईश्वर–तत्व–विज्ञान–शिविर

दिनांक: 11, 12 व 13 नवम्बर 2013

मान्यवर,!

विश्व के मानव किसी न किसी रूप में एक अदृश्य सर्वशक्तिमती सत्ता के अस्तित्व को सृष्टि के आदि काल से मानते चले आये हैं। विगत शताब्दी के कई महान् वैज्ञानिक जिनमें सर अल्बर्ट आइंस्टीन एवं रिचर्ड पी. फाइनमैन जैसे अतीव प्रख्यात भौतिक विज्ञानी भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते रहे हैं। वर्तमान जगत् के स्टीफन हॉकिंस जो लगभग तीन वर्ष पूर्व तक ईश्वर के अस्तित्व को मानते थे परन्तु अब अकस्मात् अपनी पुस्तक The Grand Design में ईश्वर की सत्ता को सर्वथा नकारकर विश्व भर के ईश्वरवादियों का खुला उपहास कर रहे हैं और उनकी इस पुस्तक को पाश्चात्य मानसिकता वाले भारतीय मीडिया व प्रबुद्ध वर्ग ने हाथों हाथ लपककर ऐसे प्रचारित किया, मानो करोड़ों वर्ष में यह बडी भारी वैज्ञानिक खोज हो। हमारे पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने इस पुस्तक को पढ़कर देखा तो हॉकिंस साहब के विचारों की नितान्त दुर्बलता, संकीर्णता व व्यर्थ अहंकार की जानकारी मिली। ऐसे विकट व संशय भरे वातावरण में क्या आपके मन–मस्तिष्क में भी ये प्रश्न उठते हैं कि–

1– ईश्वर नाम का कोई पदार्थ सृष्टि में है, वा नहीं? स्टीफन हॉकिंस अथवा अन्य किसी भी वैज्ञानिक द्वारा ईश्वरवाद के खण्डन के पीछे मूल कारण क्या है?

2– यदि ईश्वर नामक कोई सत्ता ब्रह्माण्ड में है तो उसका गुण–धर्म–स्वरूप कैसा होना चाहिए? ईश्वर क्या केवल आस्था करने की वस्तु है अथवा उसका कोई ठोस वैज्ञानिक स्वरूप भी है?

3– यदि ईश्वर नामक पदार्थ वास्तव में है, तो उसके नाम पर विश्व में विभिन्न सम्प्रदायों में इतने गंभीर मतभेद क्यों हैं? तथा उसके मानने वालों यहाँ तक कि ईश्वर विषय के गम्भीर व्याख्याताओं में परस्पर वैर विरोध तथा कथनी व करनी का भारी भेद वा मिथ्या छल कपट आदि क्यों है? जबकि विज्ञान के नाम पर ऐसा कहीं नहीं देखा जाता, सिवाय किसी अपवाद के।

4– कहीं ऐसा तो नहीं है कि जिस ईश्वर के नाम पर संसार भर में जो दिखाई दे रहा है,ऐसा कोई ईश्वर इस ब्रह्माण्ड में हो ही नहीं।

इन्हीं सब बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए वैदिक जगत् के प्रख्यात् वेद एवं वर्तमान–विज्ञान गवेषक पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक के द्वारा स्टीफन हॉकिंस के अनीश्वरवाद की तार्किक, वैज्ञानिक समीक्षा करके ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि एवं उसके वास्तविक वैज्ञानिक स्वरूप व गुण धर्म को तार्किक व वैज्ञानिक रीति से प्रतिपादित किया जायेगा।

महोदय !

हम आपसे विशेषकर उन अति प्रतिभाशाली वैज्ञानिक दृष्टि वाले युवकों, प्रोफेसर्स, इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, प्रख्यात शिक्षाविद्, शासकीय अधिकारी, कर्मचारी, प्रबुद्ध व्यापारी, समाजसेवी, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

www.thearyasamaj.org

के संवाददाता आदि का आह्वान करते हैं कि वे इस शिविर में पधार कर पूर्ण निष्पक्ष व वैज्ञानिक विवेचना का लाभ उठावें। हमारा यह भी निवेदन है कि यदि आप में से कोई भी प्रतिभाशाली अनीश्वरवादी इस शिविर के उद्घाटन समारोह में ईश्वरवाद के खण्डन में वैज्ञानिक युक्तियों से पुष्ट व्याख्यान देना चाहेंगे, तो उन्हें कुल मिलाकर दो घंटे का समय दिया जायेगा। उसके उपरान्त आचार्य जी उन वक्ताओं तथा स्टीफन हॉकिंस की पुस्तक में दी हुयी सभी युक्तियों का उत्तर देंगे।

महानुभाव ! हम उन बन्धुओं को भी मत, सम्प्रदाय, वर्ग, देश, भाषा के सभी मतभेद भुलाकर इस शिविर में आमंत्रित करना चाहेंगे, जो ईश्वर, खुदा, गॉड आदि के नाम पर धार्मिक रीति-रिवाजों को तो मानते हैं परन्तु वे विज्ञान के तर्कों से भयभीत भी हैं अथवा उन्हें स्वयं ईश्वर आदि के अस्तित्व पर गम्भीर शंकाएं हैं, जिन्हें अपनी मजहबी कट्टरता अथवा सामाजिक निन्दा के भय से व्यक्त नहीं करते। स्मरण रहे कि यदि ईश्वर है तो सबको निष्पक्ष रूप से मानना ही चाहिए और यदि नहीं है, तो सबको ही उसके नाम पर व्यर्थ आडम्बर छोड़ देना चाहिए। यदि ईश्वर नहीं है तो संसार के सभी सम्प्रदाय मिथ्या सिद्ध होंगे और यदि ईश्वर है तो भी वह एक ही होगा, उसका एक ही वैज्ञानिक स्वरूप होगा। तब भी उसके नाम पर भेदभाव, अमानवीयता का होना सम्भव नहीं।

आइये ! विश्व के इस गम्भीर विषय पर खुले मस्तिष्क व उदार हृदय से आचार्य जी के विचारों का श्रवण करके अपने आत्मा व मस्तिष्क को जो भी उचित व वैज्ञानिक प्रतीत होवे, अपना कर मानवता की रक्षा में सहयोग देवें। यह कार्यक्रम कार्तिक, शुक्ल, 9,10,11 तदनुसार 11,12,13 नवम्बर को प्रख्यात वक्ता राष्ट्रचिन्तक पूज्य आचार्य श्री धर्मबन्धुजी महाराज, राजकोट (गुजरात) के मुख्य आतिथ्य एवं माननीय श्री टी. सी. डामोर साहब, पुलिस महानिरीक्षक, उदयपुर तथा पदस्थापित वाइस चांसलर, श्री राजीव गांधी जन जाति विश्वविद्यालय, उदयपुर की अध्यक्षता में होगा।

जो महानुभाव इस शिविर में आना चाहते हैं वे आश्विन अमावस्या, वि. सं. 2070 तदनुसार 04-10-2013 तक अपना आत्म विवरण (Bio Data) ई-मेल, स्पीड पोस्ट अथवा पंजीकृत डाक से भेजकर पंजीकरण अवश्य कराने का कष्ट करें। जो प्रतिभाशाली युवा विद्वान् ईश्वरवाद का खण्डन वैज्ञानिक युक्तियों से करना चाहेंगे, वे अपना लेख भी इसी के साथ प्रेषित करने का कष्ट करें। अनीश्वरवादी लेखों में से अधिकतम 5 लेखकों को बोलने का समय दिया जायेगा तथा प्रत्येक वक्ता को अधिकतम 20-20 मिनट का समय दिया जाएगा। यदि वक्ता कम हुए तो अधिक समय दिया जा सकेगा। हम चाहेंगे कि वक्ता उच्च कोटि के वैज्ञानिक तर्कों से ही युक्त लेख भेजें। हम उनमें से उच्चतर स्तर के लेखकों को बोलने का समय देंगे तथा शेष को श्रोता के रूप में पधारने का आग्रह करेंगे। ध्यान रहे कि अपने वक्तव्य में वक्ता किसी सम्प्रदाय के ग्रन्थ वा वैज्ञानिक के विचार को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं करेंगे। हां, उन ग्रन्थों अथवा वैज्ञानिकों की युक्तियों को तार्किक ढंग से अवश्य प्रस्तुत करें। सभी वक्ताओं के तर्कों तथा स्टीफन हॉकिंस की वैज्ञानिक युक्तियों का उत्तर देने में आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक भी किसी शास्त्र को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं करेंगे। हाँ, शास्त्र की वैज्ञानिक युक्ति युक्तता को प्रतिपादित अवश्य कर सकते हैं। अति सीमित संसाधनों के कारण स्थान सीमित हैं, इस कारण पंजीकरण व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें।

निवेदकः मंत्री, श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास (वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान) वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर (राज0) दूरभाष : 09829148400, 07742419956

www.thearyasamaj.org

आर्य जगत के समाचार

महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिए, आर्य समाज निहालोठ के तत्वावधान कप्तान जगराम आर्य के नेतृत्व में वेद प्रचार पद यात्रा 16 अगस्त 2013 से 22 अगस्त तक ग्राम दाणी मालियान, बूढवाल, रायपुर, गोठड़ी, नियामतपुर, मोरूण्ड, आसरावास, नायन, धनवास, बनिहाड़ी, कालवा, नांगल चौधरी, मोहनपुर और नांगल कालिया में सम्पन्न हुई। इन गावों में 100 किलोग्राम घी का हवन हुआ। सैकड़ों युवक और युवतियों को जनेऊ दिये और उनके दुर्व्यसन छुड़ाए। सत्यार्थ प्रकाश आर्य सत्संग गुटका ऋषि दयानन्द का चित्र भेंट करके प्रत्येक ग्राम में वैदिक पुस्तकालय का उद्घाटन किया। आर्यसमाज की स्थापना की। एक दिन पहले इन गावों में सम्पर्क करके कार्यक्रम की जिम्मेवारी सौंपते हैं। गाँव की गली-गली, द्वार-द्वार पर जाकर जन-जन को वेद प्रचार की सूचना देते हैं। सभी ग्रामीण अपने-अपने घर से घृत, सामग्री और प्रसाद लाते हैं। सार्वजनिक स्थान पर पहले हवन करते हैं पश्चात् भजन और उपदेश करते हैं। कालवा निवासी श्री इन्द्राज ने अपनी ओर से 100 सत्यार्थ प्रकाश वितरित करने का संकल्प किया है। ग्राम मोहनपुर में एक युवक राकेश आर्यसमाज की आलोचना कर रहा था। वेद प्रचार सम्पन्न होने पर युवक राकेश ने बताया कि आर्यसमाज तो चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त सबका भला चाहता है। मुझे बहुत भ्रान्तियाँ थी कि आर्यसमाज भगवान और देवताओं को नहीं मानता पर प्रचार सुनने पर मेरी सभी भ्रान्तियों का निवारण हो गया है। अब मैं भी आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार करूँगा। इन गावों में नमस्ते का प्रचार हो गया है। प्रचार-प्रसार करने से लोग वैदिक सिद्धान्तों को समझ जाते हैं।

वेद प्रचार पद यात्रा में सहयोग देने वाले पण्डित रमेश शास्त्री, मास्टर अमृतलाल आर्य, सत्यवीर आर्य, थानेदार रामचन्द्र मेघोत हाला, बलदेवसिंह चहल, राजकुमार आर्य धोलेड़ा, फूलचन्द्र, डॉ0 मुरारी बूढ़वाल, हनुमान आर्य अमरपुरा आदि ने गाँव-गाँव जाकर वेद प्रचार करने से स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर उपायुक्त ने प्रसन्न होकर कप्तान जगराम आर्य को सम्मानित किया। ❁❁❁

महापुरुषों की जयन्ती		महापुरुषों की पुण्यतिथि	
महात्मा गाँधी	2 अक्टूबर	गुरू गोविन्दसिंह	7 अक्टूबर
लालबहादुर शास्त्री	2 अक्टूबर	जयप्रकाश नारायण	8 अक्टूबर
रानी दुर्गावती	5 अक्टूबर	राममनोहर लोहिया	12 अक्टूबर
जयप्रकाश नारायण	11 अक्टूबर	विट्‌ठलभाई पटेल	22 अक्टूबर
सूर्यसेन	18 अक्टूबर	श्रीमती इन्दिरा गाँधी	31 अक्टूबर
महर्षि वाल्मीकि	18 अक्टूबर		
भगिनी निवेदिता	28 अक्टूबर	डाकतार दिवस	10 अक्टूबर
श्यामजी कृष्ण वर्मा	30 अक्टूबर	विजयदशमी (दशहरा)	13 अक्टूबर
होमी भाभा	30 अक्टूबर	आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस	20 अक्टूबर
सरदार बल्लभभाई पटेल	31 अक्टूबर		

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज डबरा में चार दिवसीय वेद प्रचार उत्सव का आयोजन

गत वर्ष की भांति डबरा नगर में चार दिवसीय वेद प्रचार उत्सव दिनांक 23.08.2013 से दिनांक 26.08.2013 तक आयोजित किया गया। नगर के प्रतिष्ठित समाजसेवी श्री राजेन्द्र कंदेले के व्यवसायिक काम्पलेक्स व्हाइट हाउस में उत्सव का आयोजन किया गया।

प्रत्येक दिवस सुबह 8.30 से 11.00 तक चार अलग-अलग परिवारों में यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ उपरांत पं. विपिनबिहारी आचार्य मथुरा के प्रवचन हुए, सभी पारिवारिक यज्ञों में उपस्थिति 25 से 50 के मध्य रही। यज्ञ का आयोजन श्री घनश्याम शर्मा, श्री ओमप्रकाश भदौरिया, डॉ0 सुमंगला शर्मा एवं उमेश शर्मा के निवास पर सम्पन्न हुआ। यज्ञ उपरांत प्रसाद वितरण हुआ। चारों दिवस विद्यालयों में आचार्य जी का उद्‌बोधन हुआ। दिनांक 23.08.2013 को शा. उत्कृष्ट उ.मा.वि. डबरा दिनांक 24.08.2013 को बनखण्डेश्वर उ.मा.वि. में दिनांक 25.08.2013 को श्रीराम पब्लिक स्कूल डबरा एवं दि. 26.08.13 को संत कंवरराम उ.मा. वि. डबरा तथा डी.ए.वी. उ.मा.वि. डबरा में बालक/बालिकाओं को विद्यार्थी जीवन से सम्बन्धित आचार्य एवं व्यवहार सम्बन्धी जानकारी आचार्य जी एवं प्रधान जी द्वारा दी गई। प्रत्येक विद्यालय में विद्यालयीन प्रबंधन का सहयोग सराहनीय रहा। छात्र उपस्थिति 70 से 200 के बीच रही। पांचों विद्यालयों में लगभग 800 छात्र/छात्राऐं लाभान्वित हुई।

प्रत्येक दिवस रात्रि 7.30 से रात्रि 10 बजे तक वेद मंत्रों के माध्यम से आचार्य जी ने दिनांक 23 .08.13 को वेदों की उत्पत्ति एवं महत्व, दि. 24.08.13 को गृहस्थ धर्म, दि. 25.08.13 को विवाह एवं गर्भाधान संस्कार तथा दि. 26.08.13 को योगेश्वर कृष्ण के चरित्र एवं प्रबंधन नीति पर बड़ा ओजस्वी प्रवचन दिये। प्रत्येक दिवस ईश्वर भक्ति एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की महिमा के भजन श्री ओमप्रकाश भदौरिया, जयदयाल शर्मा, यतेन्द्र सिंह चौहान, उमाकांत खरे एवं रमाशंकर चतुर्वेदी ने प्रस्तुत किए। प्रत्येक दिवस श्रोताओं की उपस्थिति 40 से 70 के बीच रही। प्रवचन उपरांत प्रसाद का वितरण किया गया एवं नगर के संभ्रान्त नागरिक क्रमशः श्री बाबूलालगुप्ता, डॉ0 स्वतंत्र कुमार सक्सैना, श्री चिन्तामणी गुप्ता एवं श्री गंगाराम जी रौहिरा द्वारा कार्यक्रम की अध्यक्षता की गई। उत्सव आयोजन की नगर में प्रशंसा हुई और कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ। श्री सत्यपाल डावानी, श्री घनश्याम शर्मा, उमाकांत खरे, सुरेश शिवहरे, रघुवीर सिंह रजक, उमेश शर्मा, छदामी लाल कुशवाह, यतेन्द्रसिंह चौहान, सत्यप्रकाश भदौरिया, रामशरण गुप्ता, मुकेश श्रीवास्तव, मदनसिंह परमार, धमेन्द्रसिंह कुशवाह, महेन्द्रसिंह जोधपुर वाले, टहलराम मंगतानी, देवीदयाल गुप्ता, अमित गौड़ तथा संतोष केवट आदि का सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा। ❁

www.thearyasamaj.org

में क्या नहीं किया है? गद्दाफी, सद्दाम हुसैन, ओसामा बिन लादेन जैसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

जब स्वार्थ अपनी वासनाओं की पूर्त्ति के लिए सुरसा के समान मुख फैलाता है तो गैंपरेप जैसे वीभत्स दृश्य सामने उपस्थित कर देता है आज स्त्रियाँ अपनों से ही सुरक्षित नहीं हैं पुरुष भी अपनी निकट की स्त्रियों के जाल में फँसकर कुल, मान, मर्यादा, परम्परा को ही ताक कर रख देता है। आज इस स्वार्थ की वासना रुपी सेना ने सभी को परास्त कर दिया। सदाचार ब्रह्मचर्य से युक्त संयम की शिक्षायें देने वाले 18वीं सदी के पिछड़े घोषित किये जा रहे हैं। पुनीत सतीत्व को इस राक्षस ने चौराहे पर नंगा खड़ा कर दिया है। इसकी बात करने वालों के पुतले काम वासना की दास नई पीढ़ी चौराहे पर फूँकना प्रारम्भ कर देती है उस नई पीढ़ी को होश तक आता है जब वासना का प्रबल स्वार्थ उन तन, मन, धन को चटकर जाता है और वे बरबस असहाय जीवन के उस पड़ाव पर पहुँच जाते हैं जहाँ जीवन को समाप्त करने के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं रह जाता है। तब उनकी तथाकथित उन्मुक्त आजादी पर बर्बादी क्रूर अट्टाहास करने लगती है और ये आजादी की दम भरने वाले केवल दया के पात्र बनकर बर्बादी में ही अपना दम तोड़ देते हैं। वासना के रूप में स्वार्थ व्यक्ति पर जब हावी होता है तब धन, वैभव, यश सभी कुछ धूल में मिला देता है तब संत आशाराम सिंहासन से नीचे गिरकर बलात्कारी दुरात्मा आशाराम बन, जेल की रोटी खाने पर बाध्य हो जाता है। 87 वर्षीय राज्यपाल नरायणदत्त वेशर्मी की सारी सीमायें तोड़कर माननीय राज्यपाल के पद से नीचे गिरकर लाचार अपने नारायणदत्त नाम को कलंकित करने वाला पुरुष बन जाता है।

जब जमीन की भूख बनकर स्वार्थ व्यक्ति में घुसता है तो ओमप्रकाश चौटाला जैसों को जेल की रोटी खिला देता है। इस स्वार्थ के व्यापक साम्राज्य में, जो भी आज़ादी का दम्भ लेकर प्रवेश करता है वह अपना सर्वनाश ही कर बैठता है। आज सर्वत्र इसी का बोल–वाला है। क्या स्वार्थ की भावना से प्रेरित राजनेताओं ने अपने प्रिय राष्ट्र को विभाजित नहीं किया? क्या वोटों के स्वार्थ में आज भी तुष्टीकरण की नीति का सहारा लेकर राष्ट्र विभाजन की नींव नहीं रखी जा रही है? पर कहा जाता है कि स्वार्थी दोष नहीं देखता है। चाहे सबका नाश हो जाय पर उसका पेट भरे। पुराणादि के रचनाकारों ने अपने स्वार्थों की पूर्त्ति के लिए निन्दित साहित्य लिखकर भारत की अपूरणीय क्षति की है। स्वार्थी सत्य को कभी भी स्वीकार नहीं करता है वह तो आजादी आदि का बहाना लेकर नानारूपों में संसार के सामने लुभावने दृश्य प्रस्तुत करता है। अल्पज्ञ लोग उसके वश में होकर अपना, समाज, राष्ट्र का अकल्पनीय अहित करते हैं।

इन सारी समस्याओं का एक मात्र समाधान यही है वैदिक संस्कृति के प्राण यज्ञ शब्द की व्यापकता को नई पीढ़ी को समझाया जाय। इदं न मम का भाव उनके रग–रग में भर दिया जाय। और महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज के दसवें नियम को सर्वत्र आत्मसात् कराया जाय कि प्रत्येक को सामाजिक सर्वहितकारी कार्य में परतंत्र रहना चाहिए और अपने हितकारी कार्य में सब स्वतंत्र रहें। यदि इस प्रकार नई पीढ़ी के मानस को तैयार किया जाय और वैसा भी वातावरण बनाया जाय तो कुछ बात बन सकती है। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरुद्धार की महती आवश्यकता है जहाँ बालकों को यज्ञमय जीवन जीने की ही शिक्षा दी जाती है जिसे आध्यात्म विद्या भी कहते हैं जिससे मन पाप रहित और पवित्र होते हैं यदि उन स्वार्थ–पारायण संस्कारों को मन में ही समाप्त कर दिया जाय तो अपराध होंगे ही नहीं क्योंकि मन का पाप जब क्रिया में आ जाता है तभी उसको अपराध कहते हैं यदि मन के पाप मन में ही नष्ट कर दिये जायें तो निश्चित रूप से अपराध नहीं होंगे और इस विधि से सम्भवतः मानव समाज बच जाय और चहुँ ओर शान्ति की स्थापना मार्गप्रशस्त हो सके। ❁❁❁

www.thearyasamaj.org

'तपोभूमि' अक्टूबर 2013 R.N.I. No. 2321/57 रजि. सं. MTR नं. 04/2013-15

सत्य प्रकाशन मथुरा के अनमोल प्रकाशन

शुद्ध रामायण	150.00	शुद्ध सत्यनारायण कथा	10.00
शंकर सर्वस्व	120.00	महिला गीतांजलि	10.00
मानस पीयूष (रामचरित मानस)	100.00	क्या भूत होते हैं	10.00
नारी सर्वस्व	60.00	आर्यों की दिनचर्या	10.00
शुद्ध कृष्णायण	50.00	महाभारत के कृष्ण	8.00
शुद्ध हनुमच्चरित	40.00	ब्रजभूमि और कृष्ण	8.00
संस्कार चन्द्रिका प्रथम भाग	40.00	सच्चे गुच्छे	8.00
विदुर नीति	40.00	मृतक भोज और श्राद्ध तर्पण	8.00
वैदिक स्वर्ग की झांकियाँ	40.00	नवग्रह समीक्षा	6.00
चाणक्य नीति	40.00	आर्यसमाज और श्रीराम	6.00
वेद प्रभा	30.00	आचार्य श्रीराम शर्मा : एक सरल चिन्तन	5.00
शान्ति कथा (प्रेस में)		वृक्षों में जीव है या नहीं	5.00
नित्य कर्म विधि	30.00	गायत्री गौरव	5.00
संगीत रत्नाकर प्रथम भाग	25.00	महर्षि दयानन्द की मान्यतायें	5.00
बाल सत्यार्थ प्रकाश	25.00	सफल व्यक्तित्व	5.00
यज्ञमय जीवन (प्रेस में)		सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	5.00
दो बहिनों की बातें	25.00	मुक्ति प्रदाता त्रिवेणी	5.00
दो मित्रों की बातें (प्रेस में)	25.00	जीजा साले की बातें	5.00
मील का पत्थर (प्रेस में)		भागवत के नमकीन चुटकुले	5.00
सुमंगली (प्रेस में)		आदर्श पत्नी	5.00

आवश्यक सूचना

1. पाठकगण वर्ष 2013 के लिये वार्षिक शुल्क 150/- रूपये अविलम्ब भिजवायें तथा पन्द्रह वर्ष की सदस्यता हेतु 1500/- भिजवायें।
2. पत्रिका भेजने की तारीख प्रतिमाह 7 व 14 है, कृपया ध्यान रखें।

बुक-पोस्ट
छपी पुस्तक/पुस्तिका

सेवा में,

....

....

....

....

.... पिन कोड ....

पत्र व्यवहार का पता :-
व्यवस्थापक - कन्हैयालाल आर्य
सत्य प्रकाशन
डाकघर- गायत्री तपोभूमि, वृन्दावन मार्ग
(आचार्य प्रेमभिक्षु मार्ग), मसानी चौराहे के पास,
मथुरा (उ० प्र०) 281003
फोन (0565) 2406431
मोबा. 9759804182

Yogendra#9927136600

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक आचार्य स्वदेश के लिए रमेश प्रिन्टिंग प्रेस, पंचवटी, मथुरा में छपकर सत्य प्रकाशन मथुरा से प्रकाशित